ब्र-टी· वधांनहूं आदेनिर्दोषवाकूं यहदोहूं एकसंगकोहूं
असावधांनीनचहीये १६४ श्लोक इतिमदनदेवयु
वतिप्रभृतिसुरलोचमानहानिरियं उद्यानिरविलाग
श्रीकृस्नोविलानेवमहतीषु १६५ याकोअर्थ चंद्रमांके
दर्प देवता युवती आदि औरदेवतानकेमानकीहानि
यहीहेजो तुंमसर्वांगकीसोभाप्रकटकरिकें नग्नहोइ
व्येष्टविहारकीनोंहे यहवडोईविषेउचितनांहीहें १
६५ श्लोक भगादंगश्रीजलधौकीडंतोनयनमीनराजो
नः सहसावाऊडीपेपतितावात्तोपत्तीवत्सव १६६ याको
अर्थ तुंमारेअंगकीपरसअतिशयश्रीसोभासमुद्रवि
षेंहमारेनयनरूपमीनराजमहाक्रीडाविहारकरनवि
षें सहसाएकाएकवाडवाग्नि [illegible] पुवीचपडेहें तातें
अत्यंतआरतिवंतभये नयनरूपीन पालिम्पायोनिमा
छाद्य करतभये तवश्रीठाकुरजीआपनेंनयनरूपीमी
न अतिआर्तिभयेहें क्रीडामेंप्रतिवंधभयेदीप १६६ श्लो
क इतिसहृदयवचासवाव्रतश्रुतिभश्रुताभिहितमम
क्तिंकर्मछिद्रकथंनुसमाहितं भवतिसुरसंतोषादोष
प्रमोषइतिहृणनिजहृदिविचारंताश्चक्रुः प्रमोदमया
न्विता १६७ याकोअर्थ इतियाप्रकारसहृदयेश्रीठाकु
रजीकेहाईईकोंसुनिकें अभ्युतश्रीठाकुरजीनेंकह्योजो
व्रजकीश्रुतिहेयगी यहश्रीठाकुरजीकोकह्योमानिकेरि
कें यहअतिहितहमारेकर्मकोछिद्रकहांतेंहोयतोआ
योहे अबदेवतासंतुष्टहोइ औरदोषजाय सोयहहृदए
कआपुनेंहृदयमेंहृणोकतेंव्रजभक्तविचारकरतभए
सोकछूकप्रमोदऔरअभयसोंमिले १६७ श्लोक नपारया
मःपुरुषांतरेनतिंकर्तुंतथामाभवतादृपिकचित् आ
साप्यनुलंघ्यलमाप्रियस्पनस्तदत्रभोकिंनुविधेविधेयं

१६८ याकोअर्थ पुरुषोत्तमरे पिन नमस्कार करिबेकों तोकसें
हूं सांमर्थ नांही हे सोसर्वथा न करे और तेसें कवहूं काहू
होऊ मति तुम हमकों काहू और ठौर नमस्कार हो और
हमारे प्राणप्रीतम कीआशा रूप नुलेघ्य हे हमकों सो
तातें हे विधाता इहा कोंन विधि करे १६८ श्लोक चिरादिष्ट
दृष्टे खिलफलतया प्रतिपुरः स्थित वैगुण्यंत त्करणांगम
किंचित्करमतः विधेयास्मि नेव प्राणेतिर न येवाखिलमि
दं भविष्यत्यस्माकं प्रियपदगतीनांश्रुमत रं १६९ याकोअ
र्थ बहुत काल पाछेंसें प्राणेस प्रेष्ठ लमदेषे सर्वस्व फलत
याकरिकें अव तो हमारे आगें स्थित विषें वैगुण्यंत त्कर
णांग आकिंचित्करमतः कर्मको वैगुण्य विपरीत गुण ता
को वैगुण्यको करणांग हमारो कछुक कीयो परमफल
तो हमपा इ निबडे हे सो हमकों येह आगें स्थित हे जो या वि
षें ही नमस्कार करें अमहे सो करिकें ही ये हसर्व होयगो
हमनकूं प्रियचरण प्राप्ति याको सर्वे सुमत माया ही क
रिकें होयगो १६९ श्लोक इतिसहसा स्फुरत्सोमत्स्वामिन्या
प्राणवल्लभ मनेवृः बद्धांजलि मतिसुभगेयू ध्वतिमुग्धा
ननाः सुमुखिः १७० याकोअर्थ याप्रकार मेरी श्रीस्वामि
नीजूकों सहसा एकाएक अकस्मात् स्फुरयो जो आपुने
प्राणवल्लभकों नमस्कार करूं तव अंजलीकों बांधिक
रिकें अतिशुभग मस्तक विषे अत्यंत मुग्ध सुंदर आ
ननाः हे सुमुखि १७० श्लोक ततस्तादृग्भावावनतिनिग
दाख्यातसहजप्रतिपत्तिः प्रेयस्या स्मोरु चिरनवनीवीहृति
रदात् सरोजाक्षः प्राणप्रियभुजयुगस्पर्शिवसनाभिमर्श
श्रोत्साह प्रशिथिलतरांगः समभवत् १७१ याकोअर्थ
तदनंतर एता दृश भाव करिकें नमस्कार करत भ
ए हें जो निगदाख्यात कहे जो सहज तें व्रजभक्तनकी प्र

मतिदेषिकरिकें श्रीठाकुरजीसुंदर नूतन कांमरूपनीवी
कोंदेषैतभएहें तवसरोजाक्षीयोजोब्रजभक्तहें सोंश्रापु
नेंप्राणतेंहू प्रियतमजो श्रीठाकुरजीश्रापुकेभुजयुगकों
स्पर्सजोवस्त्रनकूंभयोहे जोएताद्रृश वस्त्रकेश्रभिमर्सस्प
र्सतें प्रकर्षकरिकें शिथिलतमश्रंगहोतभईसम्यक १
७१ श्लोक तत्परिधानेपितदासामर्थ्यवीक्ष्यसारसाक्षीणां
परिधापयितुंताःस्वयमवरूरुहाणां प्रियोनीपात् १७२ या
कोश्रर्थ तेवस्त्रकें पहिरवेविषेंहूतासमये तेसारसाक्षी
कोंश्रसामर्थ्यदेषिकरिकें वस्त्रपहिरायवेकोंब्रजभक्तनकों
श्रीठाकुरजीश्रापकदंवपरतेंउतरिश्रावतभए प्राणप्रि
यनीपतें १७२ श्लोक कांचनकोकमलोपरिलसद
लिवृंदरुचिरकराणु लिवदनेनाप्रोंछतत्सन्मुखमा
स्थितःप्रेयान् १७३ याकोश्रर्थ कनकएककेतकोंजेसेंसोव
र्णकनककमलकेरूपनीसरस सोभायमानभ्रमरकेवृं
द यूथ एसादृश मुषकरपासविषें श्रीठाकुरजीश्रापु
नेंपींछतेंवस्त्रकरिकें पोंछतभएहें सोश्रीठाकुरजीकेसन्मुष
प्रियानगनस्थितहोतभईहें १७३ श्लोक ततस्तयाससर्वा
गचक्रारयुगपत्सखि सर्वाश्चनेकरूपापिकुमारीभिरल
क्षतः १७४ याकोश्रर्थ तदनंतरतेसेंही सर्वश्रंगनविषें
पोंछतभएहे सोस्पर्सचुंवनहूंकरतभएहें जोहेसखि
सवब्रजभक्तनविषेंश्रनेकरूपकरिकेंहूंपोंछतभएहें
परिकुंमारीकारिकेंश्रलक्षितहे सोश्रनंतरूपनदेखें
एकहीरूपदेख्यो १७४ श्लोक ततःकटितटेतस्याःपटंपदय
मेनसंदाम्नाववंधविविधानुसंधानोवृजारुणं १७५ या
कोश्रर्थ तदनंतरतेंब्रजभक्तनकेंकटितटविषेंपद्ममय
पटोलाकोंकरिकें पटोलाकें। विविधडोराकरिकेंवांधत
भएभलीभांतिसों विविधसर्वरसश्रनुसंधानपूर्वकश्रार

रुकमलको १७५ श्लोक शितवसन रचित कुसुमांचित
कंचुक्यासकांचनं प्रभया पश्चाद्रचितग्रंथ्या सपुलकत
दुरोचयामास: १७६ याकोऽर्थ स्वेतवस्त्रकी रचित फूल
टिकडी टिकडी करिकें अंचित पूजी पीत कंचुकी सोवर्ण
की कांतिसदृरूपी छिपा छें कंचुकी के बंदकी ग्रंथकी रचना
कीनी हें तब व्रजभक्तन के उर हृदय पुलकसहित तिन
केऊरू प्रजित होत भयो है १७६ श्लोक कुवलयदलनिभं
चलमुरूपत्युमुक्तां चितेसान्निध्ये कृत्वोन्नतकंचुकाम
करोडुरूभूषणगुंथ्यां १७७ याकोऽर्थ कमलके दलकी
आभा जेसो तो नीवीको अंचल पूंट और ऊरू कहे बहुत
बडे गजमुक्ताफल करिकें अंचित युक्त कीने हें सो तथस्मि
न्नवेणी विषें अंचल करिकें ताको उन्नत ऊंचे कंचुकी वि
षें बहुतही भूषण घना लविषें अंचल करिकें पोंछत भ
ई हें जोडेन कुच परि करिकें सोस करभ खूंटको खोंसत भ
ई हें १७७ श्लोक त्वाशाद्वार सवैरान्नतया निजे छूद्रष्ट
यास्व दृष्टिमिलनेन स्मितया कांचिद्धिलक्षण निजा
नुभवैकवेद्यभावा ... तटे वसने चकार १७८ याको
ऽर्थ अत्यंत आर्द्रता ... आर्द्रके रसको भर करिकें उन्नत
या ऊंचे करिकें आपुने इष्टतमकी दोऊ दृष्टि आपुनी दृष्टि
मिलन करिकें आपुनी दृष्टि नितनी चीमंद हास्ययुक्त आ
स्य विषेंको ऊए अनिर्वचनीय विलक्षण एक आपुने
अनुभव करिकें ही वेद्य हें भावकं दर्पके अनेक भाव हे
व्रजभक्तसन यकरिकें कटितटि विषें वस्त्रकु करत भए
हें १७८ श्लोक लज्जाविलोलांचतलोचनेन मुक्तः प्रियस्या
रूविलोकयंती मुक्ताश्च थक्रंथिमुदारनीव्या वध्नंत्यतिषत्प
रमं वुजाक्षी १७९ याकोऽर्थ एताक्त्वा अनेक कामभाव भ
येतें लज्जाकरिकें चंचललोचनके अंचल प्रांतभाग करिकें

 बारंबार सुंदरतमआपुनें प्राणप्रियतमकों देषतेहैं सा 
दरावलोकन करतहें बारंबार परमउदार नीवीकी ग्रं
थिसिथिलढीलीहोयहोयजातहे तानीवीकी ग्रंथिकोंबां
धलठाढीरहतहें उत्कृष्टकमलदलदीर्घनयनी १७९
श्लोक मुग्धस्मितमुखांभोजा मंजु सिंजाननूपुरः आगत्य
सतदापूर्वमंचलं पर्यधापयत १८० याकोअर्थ एताद्र
शअवस्था देषिकें श्रीठाकुरजी आप मुग्धसुंदिरसुस्मि
तमंदहास्ययुक्तमुखकमल और मंजु सुंदर सिंजान
शब्दायमान नूपुरयुक्त आयकरिकें तबनीवीकेअं
चलकों मांयेअगरुढावतभए १८० श्लोक ततःप्रियपी
तदुकूलमुद्धसद्व्याव वंधासितग्रुक्षशो भंत्रानैः स्मित
स्मेरसराई दृष्ट्या विलोकयन्मुग्धमुखाब्जमस्या १८१ या
कोअर्थ तदनंतर प्रियतम श्रीठाकुरजी आप पीरोवस्त्र
पीतांवर प्रियसों प्रियाकें हे ताकूं स्पर्शन करिकें आपुनेंव
तोडागाकरिकें स्पर्श अनुच्छा कुटीके भावाकी सोभा पहराइ
करिकें नूपुरयुक्त करिकें सुंदरतर स्मितअरु प्रेमसों आई
दृष्टिकरिकें प्राणप्रियानकें मुग्धसुंदरमुषकमलको
विशेषणसाभिप्रायश्रीठाकुरजी आपअवलोकनकरत
हें १८१ श्लोक प्रियतमपाणिस्पर्शोदितपुलकात्युन्नतो
रसिरवनिभो पुलकितवपुरपि रसिकः साकूतं कंचुकीभ
करोत् १८२ याकोअर्थ आपुनें प्राणतें हू प्रियतमकेहस्त
केस्पर्सतें उदयभयो जो पुलकरोमांच लेंऊं बोभयो उर
स्थल उरोजसहज उन्नतहे तापरफिररोमांच भए हें
जो आपुनी आभाहे औरशरीर विषेंहू पुलकनएहें तब
रसिकसिरोमणि श्रीठाकुरजी आपु गूढअभिप्रायपूर्वक
कंचुकीको करतभए हें आपुनें हाथपहिरावतभए हें १८२
श्लोक कोटिस्मरस्मयहरागसमहाणेनकोस्त्रिश्चिरादभिम

तेन विमुग्धचित्ताः स्वान्युत्तरीयवसनानि नितंबबिंबेरु
त्यागानैः परिदधुः सखि मूर्ध्नि नीवी १०३ याको अर्थ श्रीठा
कुरजी आपुके सहे जो अनंतकोटि कंदर्प के गर्व मोंनकूं ह
रे एतादृश श्री ठाकुरजी के अंगको देखिवेकरिके कोऊए
कवऊ तहीकालतें आपुने अभिमत अभिष्ट वांछित क
रिकें बिराजमान मुग्धचित्त मोहितचित्त होत भई हे तब
श्री ठाकुरजी नें आपुनी उत्तरीय वस्त्रको व्रजभक्तनके नि
तंबबिंबविषें करिकें ज्ञानयकरिकें मस्तकऊपर नीवीधर
त भए हे सखि १०३ श्लोक दृष्ट्वैतत्सर्वसुस्मितमुखक
मलः समागतः पूर्वं अनतिद्रढ नाम घिनाभिग्रथिमुदार
मुपाचचार नैः १०४ याको अर्थ श्री ठाकुरजी नें उनसबनकूं
देखिकरिकें मंदहास्ययुक्त मुषकमलसों पहिलें तो आय श्री
यकरिकें अनतिद्रढ नांही है कछुक याको दृढनाभिकनी
वेकी नीवीकी ग्रंथि उदार श्री ठाकुरजी आपु ज्ञानयकरिकें
षोलत भये हे १०४ श्लोक तत्र सि संस्थितामति विचित्र
नीवी स्फुरन्नितंब मुक्तिपरिधाय दत्त्वमुक्तो चितो स्कंधर
विभूषणेरुणोत्तरश्री श्री रस्पभावयदस्य भूषण युत्ते
प्रीयायाः प्रियः १०५ याको अर्थ तदनंतर शिरविषें सम्यक्
स्थिति अत्यंत विचित्र नीवीको स्फुरत करत भए हे जो ताप
कें नितंब भूमि ऊपर पहरावत भए हे सो बऊत गजमुक्ता
करिकें आ चितयुक्त हे तापाछें श्री ठाकुरजी आपुनें कांधेऊ
पर राख्यो हे जो विभूषण आरक्त मउत्तरीयको भक्तो
हे सिरविषें अभावयत कहे हे जो व्रजभक्तनके माथेऊ
पर उढावत भए हे जो बऊत आभूषणयुक्त प्राण प्रिया
नको श्री ठाकुरजी प्रियनें १०५ श्लोक काचित्सखि प्रियत
माभिमत्ता वलोकप्रोद्यत्प्रमोदनरससंभ्रमसस्मिता स्पाउ
द्यादिवाकररूचिं परिधाय नीवीं ग्रोथित्वतः परिदधौ कुच

 पट्टिकां न १८६ याको अर्थ हे सखि कोऊ एक प्राणप्रिय 
तम श्री ठाकुरजी आपुनो वांछित अभिमत चीर देखो
तब प्रकर्षेण ध्वं उदय भयो हे जो प्रमोद परमानंद को भ
र करिके संभ्रम आदर करिके सस्मित मुषारविंद युक्त
हे तब उदय भयो हे जो सूर्य की कांति जैसी नीवी को पहि
राइ करिके तब ब्रजभक्त सैथिल ते उपर कुचपट्टिका
को श्री ठाकुरजी आप पहिरावत भए हे १८६ श्लोक त
तः करपुटस्थितामलमनोज्ञमुक्ताफलः प्रवेककृतवी
टिकारुचिरकंचुकी माधवः समीक्ष्य रुचिरास्मितः सखि
समागतः सादरं तदंचलमपाकरोद् मलचंपकाभोरस
१८७ याको अर्थ तदनंतर श्री ठाकुरजी के करपुटस्थित
निरमल मन को रुचे ऐसे [illegible] मुक्ताफल प्रवेककृत
वीटिका प्रथक कीने हे जो [illegible] आस पास पोये गये
एतादृश सुंदर कंचुकी को माधव जो श्री ठाकुरजी के स
मक्ष देषि करिके सुंदर मंदहास्य युक्त हे जो हे सखि स
म्यक् मंद आदर [illegible] करिके सुंदरी को अंचल पे वि
के दूरि करत भए हे तब निर्मल चंपा की आभा सो कांति
जैसो रसज्ञ हे १८७ श्लोक तत्क्षणे प्रियतमाभिमतांग
स्पर्श हर्षभर विश्लथितांगपाः सुंदरः करपुटादपि चांच
लंकंचुकी स्वयमसौ जगृहे स्वा १८८ याको अर्थ जो ताही
क्षण को प्रीतम ने आपुनो अभिमत बहुत काल को वां
छित अंग को स्पर्श कीनो हे जो तब ब्रजभक्त हर्ष के भर
करिकें विशेषेण श्लथित अंग भये हे जो ब्रजभक्तन के
अंग सब सिथल भए हे सुंदर करपुट ते कंचुकी चां
चल आपुन ब्रजभक्तन ते का ढिले न भए हे श्री ठाकु
रजी १८८ श्लोक अंगदमस्यावाको प्रथमं परिधाप्य कंचु
की पश्चात् ग्रथित्रयमदरदासौ त्सव्यतिसुकरां माधवो मो

के १८९ याकोऽर्थ प्रथमतो श्रीठाकुरजीनें व्रजभक्त
नके वाकोविषे अंगदवजावठापहिरायकरिकें तापा
छेकंचुकीपहिरावतभएहें हे सखि कंचुकीकोतीनि
ग्रंथिदेतभएहें सोकेसीजोमाधवकेंप्रथिषोलत अ
तिसौकर्महोतहे तुरतपुलिजाइहे १८९ श्लोक को
नापितेनसरसीरुहगर्भगर्वनिर्वासनेन हरि हत्सा
हजेनसस्पाः अंतर्गतेनसहसाजनसोरभेण भावस्त
दापुलकसीत्कृतिमोहहेतुः १९० याकोऽर्थ कोमक
अनिर्वचनीयताकरिकें सरसीरुहजेकमलकेगर्भके
गर्वकोंदूरिकरनेंकरिकें श्रीठाकुरजीआपुकोहृदयहे
ज्ञातासोरनकेंसहजस्वभावलेंही हरिलीनोंहे ताअस
सोरभश्रीठाकुरजीकें अंतरंगएकोसकास्यों एकएकस
हजउपज्योजोसोरभहे सोतत्कालिकें श्रीठाकुरजीआप
कोउपज्योजाकोऊएकभाव तासोंश्रीठाकुरजीकोपुलक
मांचसीत्कारकीकुलककैंकि मोहकोहेतुभयोसोरभहे १९०
श्लोक तत्कालीनेंसोवभयोमोहकहीवक्तुंग्रास्यासक्तियु
क्तानसापि किंत्वेतत्पाः सोरभमात्मत्वमासीदेतन्मात्रमरू
चोगोचरोस्ति १९१ याकोऽर्थ तासमयकोभावककमलन
यनीनकोंकहिवेकीशक्तिश्रीठाकुरजीआपविषेंआसक्ति
युक्तहें तेव्रजभक्तनकीकेसोरभआत्मत्वहोतभएहें श्री
ठाकुरजी एतावतमात्रतोमेरेबचनकोंगोचरहें श्री
गेंतोमेंनांहींजांनतहोंजोकहाभयोहे १९१ श्लोक एता
वतीचभवतीभिरत्रापवर्तोतस्या विलक्षण विचारपरा
भिरंतः श्रेयाकथंतुकथयामि विचित्रभावसारस्यसीम
हरिरासजनुषः स्फुटोक्तिः १९२ याकोऽर्थ एतावतहीतुम
करिकें अपूपवकृतवालीहे तेव्रजभक्तनकी तेवातोंकोंवि
लक्षणविचारहे सोतत्परकरिकें अंतःकरणकेनीतरजोन

व्र·टी· वेमेंकेसंकरिकेंकछू विचित्रविलक्षणभावकोंजोसर २९
सताकीसीममर्यादामेंडहे सोश्रीठाकुरजीरासरसाध्वी
कीसेवतहें जोताकीप्रकटउक्तिहे १९२ श्लोक वसना
दानप्रसरत्स्वंपकगर्भातिसुभगभुजवल्लतिका कस्याश्चि
न्निजवक्षभयक्कणलेरसायतकिमपि १९३ याको
अर्थ श्रीठाकुरजीआपुवस्त्रकोंदेतहें सोवस्त्रलेवेकोंप
सार्योजोचंपाकेगर्भतेंहूअत्यंतसुंदरतमसुभगभु
जलतिका तबकोऊएकअनिर्वचनीयहें जोआपुनेंकं
कणचूडीकेंक्कणितहे सोसब्दायमानकरिकें श्रीठाकु
रजीकोंकछूरतिसमयकोविशेषभावस्मरणकराव
तभएहें सोव्रजभक्त १९३ श्लोक तदेवाविर्भूतप्रचुर
तिभावातिचपलेक्षणः प्रादुरभवत्सुमुखिसविकारंसपु
लकः स्वसनगाढंतस्याःकुचकरतलेपंकजमृदुस्वह
स्तेनश्रीमन्नखररुचिरस्मितमुखः १९४ याकोअर्थ
जवहीतेंआवसणकरायेहें नयोतवहीप्रगटभयो
प्रभुरजदेकरतिलय अत्यंतचपलविषे ताहीक्षणानी
वीप्रकर्षकेंलिदेतभएहें जोहेसखि कंदर्पविकारस
हितहे जोपुलकरोमांचसहितजोजबव्रजभक्तननें
वस्त्रलेवेकेंश्रीहस्तपसार्योहे तबश्रीठाकुरजीनेंतस्त्री
यनकेकरकमलतेंहूबहुतहीकोमलकरतलकोवि
गाढस्पर्सकरतभएहें श्रीठाकुरजीनेंआपुनेंहस्तक
रिकेंआपुनेंश्रीमत् सोभायुक्तनषसुंदरकरिकें एता
दृशास्मितमुखहेंश्रीठाकुरजी १९४ श्लोक तदत्यल्पाकूते
समक्षनिकिमप्यालिरुचिरस्मितस्यासोपांलेक्षणमुदित
भावरूपसहसा तदस्यान्निप्पासीन्मधुरतरभावोद्भुत
तमःसयेनेयंमग्नारसजलनिधौतत्क्षणमभूत् १९५
याकोअर्थ जवश्रीठाकुरजीआपुव्रजभक्तनकेंश्रीकरतें

लविगाढपकरिकेंनखद्दलकरतभए तवज्ञोऽत्रभिप्रा
यसहितसम्यक्त्रूपनोजोकछुहूएकहू हेसोलीसुं
दरत्तममंदहास्य ज्ञोस्यसेंत्रपोगकरिकें जोईहतए।
आनंदितभावकोजोसहसाएकाएक श्रीठाकुरजीकोंत
वतादृशभाव यहब्रजभक्तनकोंफूहोतभयो सोमधुर
तमभावअनुकुलतम तेव्रजभक्तताभावकरिकें यहव्रज
भक्तरससमुद्रमेंताहीक्षणमगनहोतभए डूवतभए
हे ९९५ श्लोक तदासारंगाद्दी निजहृदिनिधायोत्पुलकिता
निमीलदृष्टिःसानिजकरतलेतद्रसमयं मुदाश्लिष्यासा
ह्लादवशामुपमके वृशाहसाप्रियेणासीद्राधासहचरीनि
रंसुस्मितमुखी ९९६ याकोअर्थ तवसारंगाक्षीकुमारिका
मगनयनीआपुनेंहृदयविषेंश्रीठाकुरजीआपुकोंराषि
कें उत्पुलकितरोमांचितहैहें [illegible] आनंदसोंनेत्रनि
मिलनकरतभईसुं [illegible] करतलकोंकंदर्प
समयकोंआनंद [illegible] आलिंगनदीनोसाहात
हृदयमें आव [illegible] अपमुक्तसीसंभोगकीनोहें
श्रीराधाजूकीसहचरी [illegible] सुंदरीबहुतहीकाललोंसुस्मित
मुषीहोतभई ९९६ श्लोक सकलांतररतिचिन्हंकिता
मवाह्यसम्रतिप्रियांदृष्ट्वा रसिकासिरोमणिरपिसखिवि
स्मयमद्रमानाथ ९९७ याकोअर्थ आंतरलीतरसकल
आंतररतिचिन्हकरिकेंअंकितहे औरअवाह्यवाहिर
रतिचिन्हअंकितनांहीहें ज्ञोस्मरणाश्रीठाकुरजीविषेंद
जिकरिकें रसिकसिरोमणिश्रीठाकुरजीहू हेसखिपो
तिविस्मयकोंप्राप्तहोतभएहें जोरमानाथसोयाभांति
सोंअंतरारमावतभएहें ९९८ श्लोक करतलमिलदेव
लसलस्याःसुमुखियदाधत्तवान्करणेनाथ विकासि
तनयनोत्पलातदेयंसमभवद्गुहृतसीत्कृतिः सकंपे

व्र·टी· १९८ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीआपुनेकरतलसोंमिलतअं ३०
चलकूं सोतेसुंदरीयनकोहेसुमुखि जवनायहस्तक
रिकें वस्त्रकेअंचलखूंटको धरतभएहें तबव्रजभक्त
नकेविकसितनयनकमल तवइनव्रजभक्तनकोस
म्यकप्रकटभयेहें जोउदयभये सीत्कारकीकृतिः कं
पसहितसात्विकभावप्रकटहोतभयोहे १९९ श्लोक वि
स्मयानंदहासेर्ष्याव्रीडासंवलितान्तरायाः पुरः स्थिरमपश्य
त्सामाधवंलोचनांचलैः १९९ याकोअर्थ तबकहाहोत
भयो सोकहतहें विस्मय आश्चर्य परमानंद ईषत हा
स्य लज्जा संवलित अंतःकरण यहपांचहो पदार्थन
करसंवलितभएहें किलकिंचित भावकीनांईभाव
होतभयो तबतेंसुंदरीआपुनेंआगेंजोश्रीठाकुरजी
आपुठाडेहें ताकोलोचनकेअंचलसोंचलकरिकें कटाक्ष
करिकेंदेषतभईहें २०० श्लोक ततः पत्रपयाकिंचित्सं
कुचंतीमतीप्रियंवीक्ष्यसाक्षरमञ्जद्यादुकूलेपर्यधा
पयत् २०० याकोअर्थ तबकछुक अपत्रपयाकहेऔ
रतेंलज्जा जोआतमाकोऊदेषतहोय औरतेंलज्जा
ताकरिकेंकछुकसंकुचितहोतिहे सोआपुनेंप्राणनाथ
कोंविश्वोपणविरूप देषिकरिकें उतावलिवेगि कमल
दलदीर्घनयनीयों दुकूलवस्त्रकोंउपर्येपेहनतभई
हे २०० श्लोक विविधरसभावोद्गाविन्यातदासुखमास्य
दप्रियतममदनगसारंगाक्षाः आनैदृढबंधनं प्रियइह
हसान्न्यस्यैवंविमोक्ष्यतिवासईत्यजनिसहसाभावोयत
तथैवचकारसा २०१ याकोअर्थ विविधरसकेभावको
आकट्यताकीसोभासीमको आस्पद ठिकानोंहें प्राणप्रिय
तमकीदृष्टिकोंसारंगाक्षी सुंदरीमृगनयनीयोंने आन
यकरिकेंदृढनिबंधनकीनींनीवीको जोप्राणप्रियइहां

रहसि एकांतकों आश्रय करिकें जोया प्रकार आपु वस्त्र
को नीवीको खोलेंगे जोया प्रकार अकस्मात् भाव उजि
मि उपजत भयो है जो जेते तेसें ही श्रीठाकुरजी आपु
करत भए हें २०१ श्लोक प्रपदपतितं वासो वीक्ष्य प्रिया
सहसा तदा प्रियवदनमुदीक्ष्य सव्रीडास्मितानतलोच
ना सपदि जनितानंदो दुकूलादियं परिधातुमप्यभवद
पटु वासिस्त एवं प्रगृह्य च पाणिना २०२ याको अर्थ आ
पुनें प्रपद चरणके अग्रभाग विषें पर्यो वस्त्र है सो श्री
प्रियाजू देषि करिकें तब सहसा आपुनें प्राणप्रियको
वदनकमल ऊंचो देषि करिकें लज्जासहित मंदहास्य
सहित जो नीचे लोचन होत भए हें तब ताकाल ही उप
ज्यो आनंद जो ताआनंदकें उद्योतें सहे वस्त्र पहिरिवे
कों असामर्थ्य होत भए हें तब श्रीठाकुरजी आपनेंवेग
ही व्रजभक्तनके हाथतें आपु हाथ करिकें वस्त्र लीनें हें
२०२ श्लोक मुदा तदा तत् प्रिय स्मित श्रिया जितस्मरः प्र
गृह्य पर्यधापयत् दुकूल मुल्लसत्करः २०३ याको अर्थ
तब आनंदसों प्राणप्रिय आवत भये हें सो कैसे मंद हास्य
की सोभा करिकें तांको टिकंदर्पजीते हें जो सुंदरीयनके हा
थतें दुकूल वस्त्र प्रकर्षेण ग्रहण करिकें पेहरावत हें ए
ता दुकूल करिकें सोभायमान हें जो श्रीठाकुरजीके क
रकमल हें २०३ श्लोक काचिन्निजांतिकगज व्रजभूषणो
मैनीवी प्रियस्य ददतः करपंकजस्य दृष्ट्वा घनस्तनगतं
प्रतिबिंबमेतद्धस्तं तदेव सपदीत्यविदत्स्वसांगी २०४ याको
अर्थ कोऊ एक नितिहायतसखी आपुनें निकट गई है उन व्र
जभूषण अंगी विषें प्राणप्रिय श्रीठाकुरजीको हस्तकमल
करिकें नीवीकूं देत श्रीठाकुरजीके हस्तकमलको प्रतिबिं
व व्रजभक्त रत्नके सघनदोऊ हस्तन विषें प्राप्त प्रतिबिंब

कोंश्रीठाकुरजीन्आपुकोंदीनोंहे सोतेहीतात्कालयहरसांगी
नजांनतभईहे २०४ श्लोक तदैवासुदेखापुलकितवपुश्री
डितनलस्मितस्मेरापांगामुकलितमनोज्ञेक्षणयुगा प्र
मोदप्राचुर्यप्रशिथिलतरांगीकरयुगादपिसंपन्नीवीर
सभरतनुर्नाविददहो २०५ याकोअर्थ तदहीउनकूंपुल
कितवपुःरोमांचअरलज्जाकरिकेंनीचेनेत्रकरिकें श्री
रस्मितमंदहास्यहे अरसुंदरकटाक्षमुकुलित प्रफुलि
त मनोहर ईक्षण चितवोनेत्रयुगकोप्राचुर्यआनंदसेंप्र
शिथिलतरआंगीकेदोऊहस्ततेंहूनीवीस्रसन खिसप
री ताऊरसकेभरकरिकें तनुशरीरकोंनजांनतभई
हे यहबडोआश्चर्यहे २०६ श्लोक तथैवनचिरास्थितारु
चिरचित्रलेखामिवप्रियां सखि विलोकयलिखितपूर्वव्रत
तकः पुरेवपरितोषितापिसदानदृश्यंकिमप्यपस्पदु
लतदृशोभवदुदारमूर्तिःसखि २०६ याकोअर्थ तेसेंहो
बहुतहीकाललोंस्थितनांहीहे सोसुंदरचित्रलेखाकीनां
ई चित्रलिखितकीनांईहे सोबहुतकाललोंनरहीहे
जोप्रियानकोंसर्वतोअभिलोकन अवलोकनकरतहे
पहलोव्रतांतकजांन्यो पहिलेंहीपरितोषसंतोषकीनों
हैं जोलोकअयसंबाधनतबकछूहूनांहींदेनोंहे सोश्री
ठाकुरजीआपुदेषतहें उततेंव्रजभक्तनकेबसहोतभए
हें सोउदारमूर्तिः हेसषि २०६ श्लोक विकसितलोचनकु
वलययुगलाविद्धप्रियतथा भावंसंतमासहसाभून्मीन
द्वांभोविनासुमुखि २०७ याकोअर्थ विकसितभएदोऊ
ऊलोचनकमलप्रियाकोंदेषीहे सोतसेंसंतापयुतमान
[illegible]सोहोतजयोहे मछलीकीनांईहे जोजेसेंजलबिना
[illegible]लफेहे तेसेंहोतभईहे हेसुमुषि २०८ श्लोक [illegible]
न [illegible] प्रियप्राण प्रियप्राणप्रियाहरे [illegible]

निमग्नानाविदितस्वखि २०८ याकोअर्थ यद्यपिश्रीप्राणप्रिया
सुंदरीयनकेआगेंश्रीप्राणप्रियाश्रीठाकुरजीआपठाढेहें तो
हूरसभावकोसमुद्रनिर्भरअधिकाभयेहें तातेंआगेंस्थि
तश्रीठाकुरजीआपहूकोंनदेषतभएहें सोहसखि २०८
श्लोक तथाभावंतस्याःसहचरि विदित्वास्वयमसौनसोढुरा
कोभूलप्रणयभरतःसेवयमूत तदेवागत्यास्याःपृथुक
हितटेसुंदरतरंदुकूलंकृत्वास्वप्रणयमिववंधालिरस्मनो
२०९ याकोअर्थ व्रजभक्तनकोभावसमुद्रमेंडूबेहें जोतेसं
भावको तिनकेंसहचरीतादृशभावकोंजानिकरिकेंआपु
एसोउनविषेंसहबेकोंनहोतभएहें जोअतिशयप्रीति
केभरतें सोजातेंलेसोहीहोतभयोहे तबश्रीठाकुरजीश्री
पश्चायकरिकें इनव्रजभक्तनके[illegible]केतटविषेंअ
त्यंतसुंदरतमदुकूलवस्त्रकों[illegible]करिकें आपुनीप्र
नयनीश्रीप्राणप्रियाकोहृत्स्थली[illegible]कोबाधतभएहें
२०९ श्लोक शिरसितदंचल[illegible]प्राणवल्लभंवी
क्ष पुरतस्तहेव[illegible]त्याधिजहोसुमुखी २१० याको
अर्थ मस्तकविषें[illegible]विरात बेगहीप्राणवल्लभ
कोंकरतदेषिकरिकें[illegible]अंचलअंगितेतेहीवक्षस्थलविषें
करतहें विरागिनाकामाधिमानसीपीडाकोंछोडतभईहे
२१० श्लोक सुकुमारांगीमेंनास्पृशंतामित्थंप्रियंप्रियाका
चित् पस्यंतीकथमेवंमप्यपिभूयादितीत्यबदत् २११ याको
अर्थ एकअत्यंतएकुमारीअंगीकों उनकोस्पर्शकरतको
हूप्रियादेषतहें केसेंयाप्रकारमोविषेंहूहोयगो जोयाप्र
कारयहकहतभई २११ श्लोक मनोरथमहाम्भोधिमज्जने
[illegible]विस्मृतिः प्राप्तिप्रियतमस्पर्शभावपुलकितताभवत्
[illegible] याकोअर्थ मनोरथकोबडोहीसमुद्रहे तामेंम[illegible]
[illegible]नकें [illegible]अन्यसबकोविस्मरणहोततहे [illegible]

वृ.टी. प्राणप्रियतमकोस्पर्स हे तवभावपुलकित होत हे सात्वि
कआविर्भाव होत हे २१२ श्लोक केनापि तेन रसिकानुभवै
कवेद्य भावेन साति सिथिलां यपभवत दालि नीवी चशार
दसरोजैरुहसोदर श्री हस्तारविंद युगलापदत्त रूसांगपा
२१३ याको अर्थ कोन करि रू ताकरिकें परम रसिकको
रूं एक अनुभवैक वेद्य है सो जा भांति सों सातें सुंदरीस्वरूप
तसिथल अंगी होत हे ते हे आली ओर नीवी हु सीतकालके
सरोरुह सरोवर के कमलके उदर गर्भ में कीसो मोह सो
एतादृशा नीवी सो देक हस्तकमलतें गिरि परत भई हैं रू
श्रांगीके हाथतें २१३ श्लोक नीवी स्रंसामेतां दृष्टी स्मितस्नुविसे
प्रेम मोहितांगनानिचयः आहत्य ... धापयदपि नीवीं पुराद्गः
२१४ याको अर्थ जब ... सुंदरी के हस्तकमलतें नीवी
गिरि परी देखि कर ... यह मगन यनीकों तव सुंद
र मंद हास्य ... मोहित सव अंगनाकें समूह आ
यकरिकें ... हें नीवीकों प्रेमके पूर करिकें आ
ई आर्द्री यहे २१५ श्लोक याद्दग्भावयुता ऽभवत्सपदि या
तस्यात थैवाचरन्नीवीं स क्षिपयंधापयदिति स्निग्धार्द्र
हासेक्षणः लघुस्कंनर नीरदोदर मिलद्विद्युन्निभस्वप्रिया
भावांभोधि विचित्र तुंगलहरी विश्राम भूरेखयत २१५ या
को अर्थ जो जैसें भावयुक्त होत भई हें ताकों ताकाल ही ज्या
कों तिनकों तैसो ही आचरण करत भए श्रीठाकुरजी हे
सखि जाकी नीवीकों पहिरावत हें यह स्निग्ध निबिड स्ने
ह करिकें आर्द्र है हास्यसें युक्त ईक्षण हें एतादृशा युक्त
स्निग्ध आर्द्र हास्य ईक्षण एतादृशा युक्त ही हे जो नूतन
नीरदमेघके उदर विषें मिलत हे जो बीजुली की आसें भाजे
सी अपुनी प्राणप्रिया है तब भावके समुद्र विषें विचित्र तुं
गलहरी सो बीजुरी ताके बिश्रामकी भूमि हे मेघ तातें जैसें

वीजुरीको आश्रय ठिकानो मेघमें है तेसें श्रीस्वामिनीजीन
को आश्रयको ठिकानो है जो घनस्याम श्रीठाकुरजी आपमें
हेज पाते २२५ श्लोक एकस्यामपि यावच्च कारकरुणानि
धिः प्रियायांसः वक्तुं मशक्यं तावन्न ममापि किमुतालिस
वीसु॥२२६ याको अर्थ एक सुंदरी विषे जेताक विचित्र
रसदान कीनो करुणानिधि प्राणप्रिया विषे सो कहि
बेको अशक्य है के तेतो मोको कहा उत है आलि सर्वे
सुंदरीन विषे रसदान कीनो है सो कहा तेक सो जाय २२६
श्लोक रसाब्धेरस्मिन्नः सखि निरुपाधिस्नेहजलधि प्र
वृद्धो मुग्धाक्षीवदन विधुदृष्ट्यास पतितः कुमारी प्राप्ता
वास्थित सहजरागाख्य सरितः सदैकं प्राप्तः सान्वैजस
दन प्राप्तः सुनरपि २२७ याको अर्थ हे सखि श्रीठाकुरजी
आपुमें परमरसको महासमुद्र है तामें निरुपाधि स्ने
हजलधि है सो प्रकर्ष करिके बढ्यो है सो बढत ही
वाढ्यो है सो मुग्धा सुंदरीको बदन चंद्रकी दृष्टि
सो तासमुद्र में अपूरी है और कुमारिका विषे आपुत
हे जो ढूंवायराषी है सहज अनुराग नाम जो नदी तेतो ए
कको प्राप्त होत भई है जैसें नदी समुद्र आपुनें पतिको पा
वतसें २२७ श्लोक किमिह वसनान्यासां मंगे छुकारिवि
कारिणा किमपि रससर्वस्वं नैजं नु योबनमेव वा इतिव
ननतिश्चेनुं शक्यं यतः सखित लहणं नमधुरमधुरा
भावाः सांगा नभनुरतिस्फुरा २२८ याको अर्थ कहा यह
वस्त्र और सुंदरीनके अंग विषे कारि विकारी है सो श्रीठा
कुरजी आप करिके कछू एक रससर्वस्वको नैज नुयो
बनमेव वा याको तो जो नें आपुनों नवलयोवन हे दीयो है
जो मानो वा यह खेद करिके नांही सकीयतु जाते हे सखि
वसन पहिरायें ताही लहणते मधुरमधुराभावाः संगसहि

 तवभ्रवुः होतभयोहे ओरति भाव अति प्रकट होत यो 
हे २१८ श्लोक विनैव समयक्रमं सखित दायस्सी दृति
स्फुटं नवलयो वनं त्रिदरामोहनी मोहनं तदंगगुणो
न्नतकृत कनो न्यदीयोपिवा विचित्ररस भावितप्रियक
टाहगो पंपरं २१९ याको अर्थ हे सखी समयके क्रम बिनो
हीजब तव भयो अत्यंत प्रकट नूतन यौवन एताद्रसजो
देवतान्के पष्टरामोहनीजो महापुरुष कों हूं मोहत हे
एताद्रसमोहनीआको हूं मोहन करे हें ओ एताद्रस भई
है सो ताके अंग प्रत्यंग विषें अंग प्राप्ति भए हें ओ महागु
ण नहीं हे ते गुण तिनके वृत्त कीने ते अथवा अन्यदीयो
कूनां हीहे विचित्ररस भावित रससो चासें प्राण प्रिया
के कटाक्ष करिके जोपद्मकर मगुण अंग में प्राप्ति होत
भये हें २२० श्लोक तथएवयही दृष्टांत दीयं किमु वाच्यं
सखि विग्रहाद्यपं रसत्व मितो दिराडुरापं रससमापुयं
दुदारतो रसायं २२१ याको अर्थ इन ब्रजभक्तनकी वय
ही जाते हें ओर हे सखी जोकी तिनकी तो हे सखि विग्रहोपवि
ग्रह स्वरूप जो हें ताको महा कहिबे हे वयूही एताद्रसहे
तो विग्रहको तो कहा कहिवे हे केसो विग्रह हे रसरूप हे
यह इंदिरा लक्ष्मीहूंको दुरापहे तारसको आपु प्राप्ति भई
हे जो जाते उदारतः रससमुद्र ते श्रीठाकुरजी आपुते २०
श्लोक यादृशपां द्रभंगभाव युक्तमनः श्रीकृष्णस्यासु प्राविरा
तेमनोज्ञाः भावाएवव्यतिमा प्रास्त दंगेषं तस्वापित्यालि
जाना म्यहं तु २२२ याको अर्थ जेसें जेसें भाव युक्त ब्रजभ
क्तनके मनन्अंतःकरण तेसें तेसें श्रीकृष्णके भाव तिनवि
षें प्रकट होत हे ते मनोज्ञ भाव हें सो श्रीठाकुरजी आप
केभाव ही व्यक्ति प्रकट भए हें तिनको ब्रजभक्तनके अंगवि
षे प्राप्ति भए हें ओर ब्रजभक्तनके भीतर रूप यह हे आलि

मैंतोएसेंजानतहुं २२१ श्लोक पुरैवनीवीपरिधान
ताहरोश्चदैतंयूदंगोघूलवन्मगीदृशां पश्चाच्चतन्नूत
नभावतस्तयोर्मध्येपतल्लेनततोननिर्गतं २२२ याको
अर्थ पहिलेहीश्रीठाकुरजीआपनीवीपहिरावतहें सो
श्रीठाकुरजीकोचित्तजोजातेंमृगीदृशां सुंदरीयनकेअं
गविषेहोतभयोहे ओरतापाछेंव्रजभक्तनकोनीवीप
हिरेपाछेंनूतनभावतें तेदोऊभावकेबीचश्रीठाकुरजी
कोचित्तपर्योहे ताकरिकेंव्रजभक्तनकेअंगतेंश्रीठाकु
रजीकोचित्तननिकस्योहे २२२ श्लोक अतिमधुरमुदारं
वीरूपचित्तंप्रियस्याखिलमपिनिगृहीतुंचित्त धारावलेपः
रुचिरनयनमार्गेणांतराविरूपसर्वस्वगतमुदितलोच
नाहालिचक्रुःकुषांगपः २२३ याकोअर्थ अतिमधुरतम
आरतउदारतमप्राणप्रियश्रीठाकुरजीकेचित्तकोदरिव
कें सगारोंकूचित्तअतिरायपतेहे ताकरिवेकोचित्तकीधार
राकोंअवलंबनकीनोहे रुचिरनयनमार्गेणांतराविरूप
सवसुंदरनेत्रकेमार्गकरिकें अंपुनेंभीतरसवचित्त
कोंभावेंसुंकीनोहे आपुलिहें प्राप्तिआनंदलोभतेंकेहे
प्रधररसलेनेमार्गकरिकें मंगलरूपभावेंरारतभईहे
जोकुरंगीहेआली २२३ श्लोक हतेविलंताभिःस्मरनृप
तिरेततरलदृक्स्फुरदुतेस्मात्वानिशितशरसतसंधा
नचपलः ससात्यासक्तोहृलविरूयसंदीनविघूर्णयस्तः
श्चितंप्रतिविधिनदादापयदहो २२४ याकोअर्थ तेसुंदरी
करिकेंश्रीठाकुरजीआपहृतचित्तस्मरनृपतिजोकंदर्प
जोयहसुंदरीकेनेत्रचंचलतरंगहे सोतरलतरंगको
हो स्फुरद्युतीकरिकेंजानिकरिकें रात्रिकोंकंदर्पनेंचपल
तावाणसाधेहें सोकंदर्पसमयकल्लायकरिकेंश्रीठाकुजी
कोंवाणमारिबेकोंतोअंतरायहोतभयोहे हृतविरूयभयो

ब्र.टी. हे संशयगयोजोभाई मारेतोनजांइ तबश्रागिनिकोसंरोप ३५
नसंहूपणाकरतभयोहे कूंकतभयोहे नयस्तस्त्रिमितंप्र
त्तिलिधिवत् आद्यपयत्सहे २२४ श्लोक निजवक्त्रसु
धाकरेधितप्रतिगोपीरसभावासिंधुपु सममप्यवगाह
यंश्चिरंतरलैरपविलोलकुंडलः २२५ याकोअर्थ आपुने
मुखचंद्रकरिकें रधितकरे वाको प्रत्येकगोपीनतेरस
भावसमुद्रविषेसम्यकप्रकारअवगाहनहोतभयोहे सोव
ह्नतहीकालपर्यंत उनकेतरंगकरिकें विलोलकुंडलचंचलहे
कुंडलज्याके २२५ श्लोक त्रपाभरादृशामतिस्फुटतयारति
लक्षापनेऽनिसंभवति वधिकेप्रतिविचारचारुपतः
विशारितविलोचनांचलपातैकलाभीषदाननतोन्मुखत
यास्थिरंप्रियसमर्पितांप्रकरोत् २२६ याकोअर्थ भगवानेंनी
यनकोलज्जाअतिप्रकटरूपी अर्थज्ञापनविषेंसंभवति
बाधकहोयके लज्जाप्रकटताविचारचारुरीकरिकें
विशारितविलोचनकेअंचलकेपुटदोनोविषेंकीनी
हे लज्जाकोबाधके उपकऊंचेनीचेउन्मुखतयास्थिर
प्राणप्रियकोसमर्पणकरतभए लज्जा २२६ श्लोक तया
मद्व्रीडैव प्रचुरसुनिगूढानपिनिजप्रियेभावाना वेद्य
दतिमनोज्ञानिहततः प्रसन्नाः प्रत्यंगसदनमनुरूप
साविदद्धर्यपावर्द्दैतत्स्यानुपदमभिलाषोनयनयोः
२२७ याकोअर्थ तवयत्जोव्रीडाहीलज्जाहीप्रचारब
हुतसुष्ठुनिगूढहू आपुनेप्राणप्रियविषेंभावहीजनाव
तहे जोकहांवहलज्जानांहीहे किंतुआपुनेंनिगूढभाव
हीजनावतहे जोकेसेंहेंभाव उत्पतमनोज्ञहे जोअभ्य
र्थकारीहे तदनंतरप्रसन्नहोयके श्रीठाकुरजीआपप्रत्ये
केकअंगकोठिकानोंहे सोअनुरूपदेतभईहे सोहेसषि
वादेउनकोपाछेंअभिलाषदोऊनेत्रनको २२७ श्लोक यद

तासांदृष्टिःप्रियनयनपंकेरुहयुगेतदीयाचैतद्द्वयोश्च
नकुवलयेष्वाविष्टादहो तदेतासामस्याप्युचितमपरत्वे
तदितरावलोकेदृष्टिर्यत्स्वसदनगतेवालिकरणे २२८
याकोअर्थ जोइनसुंदरीनकीदृष्टि प्राणप्रियकेदोऊनयन
कमलविषेंप्रवेशहोतभयेहे श्रीठाकुरजीआपकीदृष्टिसु
दरीयनकेलोचनकमलविषेंप्रवेशहोतभईहे बडोआश्च
र्यहे तबब्रजभक्तनकोंओरश्रीठाकुरजीआपुकोंहूंउचि
तहे अपदुत्वअसामर्थ्यंतउनपरस्परतें इतरअव॰
लोकनविषेंदृष्टिः जोआपुनेठिकानेकोंप्राप्तिभईहीकीनी
हे हेआली २२९ श्लोक वचनमधुरांभोधिष्वासेततःप्रिय
संगतस्ववसनसमीक्षाब्धिषु स्पर्शरसस्वमाब्धिषु अ
थचपलतांभोधिष्वेतन्निजाधुसंगतस्ववसनपरि
धानांभोधिस्वपृष्ठ घोरचराब्धिषु २३० याकोअर्थ त
बब्रजभक्तप्रथमतोश्रीठाकुरजीआपकेबचनांमृत
मधुरसमुद्रमेंमग्नभएहे सोतदनंतरप्राणप्रिय
तमकीसंगतामृतसमुद्रमेंडूबेहे सोतापाछेंश्रीठाकु
रजीआपनेदानकीनेहें जोआपनेबस्त्रसमर्पकरीहेताए
समुद्रमेंमग्नभएहें तापाछेंताकोस्फुरतसोभासमुद्र
मेंमग्नभएहें जोतदनंतरचपलामृतसमुद्रमेंमग्न
भएहें यहलेआपुनेबस्त्रश्रीठाकुरजीआपनेपहिराए
हें सोअमृतसमुद्रमेंमग्नहें जोतदनंतरसर्वरचनां
कीनीहें अमृतसमुद्रमेंमग्नभईहें एताद्रशआठोम
हासमुद्रमेंमग्नभईहें सोउत्तरोत्तरसबसमुद्रमेंमग्
नभईहें तलत्रासस्पर्शभयोहे सोसबलीलाकोंएकहीवार
सोअद्यापिनिकसेनांहीहें २३१ श्लोक विविधरसभा
वांभोराशिष्वनुदाललनूतनेषु पिपद्द्वचलास्तभ्यस्तभ्योव
हिर्विनिर्गता: सखिसमभवन्मग्नास्वकिंकथंचविचारि

व्र॰टी॰ ते व्रजवरकुमारी णामेष प्रभावद्युतिस्थितं २३० याको
अर्थ एतादृसप्रसंस्था विविधरसभावके महासमुद्र
की रास विषें सो कृष्ण अनुसरण हैं नूतन नूतन विषें कृष्णा
ते यह कहा बला है ते कुमारिका सुंदरी ते रसभाव समुद्र में
ते अथवा पिबाहि रनाँही निकसे हैं हे सखि ते सम्यक् मगन
होत भई हैं ते कहत हैं और कैसें विचारत हैं व्रजवरकु
मारिकानु के यह स्थिति है जो तादृश रसभाव समुद्र में
डुबि रही हैं जो वे नाँही तो ता बिनु एक पल में अन्यथा भाव
दृशमीश्च वस्या होय जाइ है २३० युग्मं श्लोक अत्रैवं जा
नेहं प्रियसखि पूर्वोक्तसिंधवः सर्वे जलधौ सरित इवा
सामपांगलहरीषु संलीना २३१ याको अर्थ हे प्रिय सखि
इहां मैं तो या प्रकार जानत हूं कहि ले जो कहि आये जो सर्व
समुद्र सो जैसें महासमुद्र विषें नदी कीना इहें सो ये व्रजभ
क्तरत्नके कटाक्षकी लहरीतरंग विषें सम्यक् लीन होत भ
ये सर्वसिंधु २३१ श्लोक अतएव तदपांगस्पर्शो नवजलद
सोदरांगश्रीस्तांस्तान् भावान् भजते युगपत्यक्रमशोपि नंद
सुतः २३२ याको अर्थ ताही तें यह व्रजभक्तन के अपांगके
यत के स्पर्श तें नूतन मेघ जैसे हैं श्री ठाकुरजी आपके अंग
की शोभा है जो ते व्रजभक्तन तें भाव को भजत हैं एक ही बार क्र
म करिकें हूं नंदसुतः २३२ श्लोक भावैरेभिः स्वहृदयगतै
स्तद्वशास्तत्स्वभावान्न्यासक्तिः स्वपदकमलस्पर्शमात्रा
भिलाषाः तालाः सर्वास्तदभिलषितं दातुमाप्त तुमासां प्रेष्ठः
स्वात्माभिलषितमपिस्मरहासो जगाद २३३ याको अर्थ य
ह व्रजभक्तन के भाव करिकें आपुने हृदय में प्राप्ति करिकें जो
ता भाव के वस हैं सो ता भाव के स्वभाव और की सक्ति नाँही है
जो आपुने चरणकमल के स्पर्श मात्र की अभिलाषा [illegible] क
रिकें सर्व व्रजभक्त ताके अभिलषित को देबे को [illegible] तें

जनको आरप्राणप्रेष्ठश्रीठाकुरजी आपुनें आपुनें प्राणा
केंअखिलचितकोंहूंसुंदरहास्यकरिकें जगावत बोलत भए
हे २३३ श्लोक मधुरमधुरभावानतुदारानसुगाढन्नय
नकुवलयोत्तेनयदासात्प्रदर्शीयदखिलमपिचित्तंभजुरेताः
प्रलोभ्यस्ववशगातनकुर्वस्तत्रकोवातरायः २३४ याकोअर्थ
मधुरमधुरभावोअत्यंतउदारसुगाढसोनयनकुवल
यकेंप्रांतकरिकें यह निकरतेप्रकर्षकरिकें दिखायकें
श्रीठाकुरजीकेंव्रजभक्तनकेंप्रकर्षलोभायकरिकें आपु
नेंवसप्राप्तिकरतभएहें तबतहांकोनअंतर कोअंतर
नांहीहे २३५ श्लोक यदृश्येसर्वस्वंस्वयमपिचतस्मिन्प्रिय
तमेपुरःस्याप्रिन्सहाणोःयथमनुगतेभावनिचयः यदस्या
रेवाभतदुचिततरंयत्स्वयममेप्रियपश्चाद्गलौ वंभजति
मिलिनादेवचतयाः २३५ याकोअर्थ याअर्थकोसर्वस्वको
आरुआपहूतेंप्रियतम श्रीठाकुरजी जिनकेंआपुनीनेत्रआ
गेंठाढेहें आगेंस्याईसोनेत्रकोभागहें नेत्रपथकेंपाछेंतें
प्राप्तभएभावकेसमूहसेंजोचित्तहोतभयतेंउचिततरस्या
तेंआपुहूंप्राणप्रियताकेरागभावकोभजतहें मिलनेंतेंही दे
ऊहें २३५ श्लोक भवतुनयनवारिधेरसमयतुंगोच्छलल्क
टास्तरलाः प्रियाविविधभावरत्नान्यमी वहिप्रकटयंति
तेरापिरतिधनीवभूत्वाहमप्युदरतरमानसः किमपिव
चित्रसंतापतः २३६ याकोअर्थ तुंम्हारेनयनसमुद्रविखे
रसमयकोऊंचेकोंउछलतहें श्रीप्रियाजूकेकटाक्षतेंचल
तरंगहें सोयहविविधभावरूपरत्नानिहें सोभावरूपर
त्नकोंवाहिरप्रकटकरतहें ताकरिकेंअत्यंतधनाढ्यही
होयकरिकें मेंहूंउदारतरअंतःकरणकछूकबचनक
रिकेंसंतापतः २३६ श्लोक तातास्यापिचपललंविदधातिम
[illegible] भवज्ज्ञायायुष्मासुतेस्थिरमथातिमोनंकुर्वतेचित्र

२३६ याको अर्थ तुम्हारे लावतु लमें निरंतर रहत हैं सो मेंजो
नहें मेरे वचन को चपलता धरत हैं बोले विनु रहो जात नां
ही हैं और तुम में तो ते भाव सदा रहे तोऊ तुम को अति मोंन
कों करत हैं यह बडो आश्चर्य है २३७ श्लोक व्रत नियमार्चन
तुष्टा हृष्टा न्विषाय दवयोकार्ये चिर निभृत निजमनोर्थे पू
र्यै सा सत्फलं किमपि २३८ याको अर्थ व्रत के नियम करिकें
अर्चन पूजा ता करिकें संतुष्ट हृष्ट हैं सो आनंदित अन्विष
आयम्पलाज वहमारे तुम्हारे दोऊके कार्य में सपी परस्पर
कहत हैं जो वहुत ही काल करिके निभृत भर आपुने मनोर
थकी पूर्त्यें करिकें सोतें कात्यायनी भद्रकाली कछूक फलकों द
त भई हैं २३८ श्लोक येनापि प्रोभा नि जनिज पतिताम
त्य भी छांचि नस्त्या लिग्र हणं धाव सहज मया मप्य वेस
खचिते मामेवा पूजय कुसुमस्तोमसां तांबूल
मुख्योर प्यैः प्रेमा पुरः सर्व भावेन सखी ३९
याको अर्थ भावा वहुत भाव प्रत्येक
अतांत मेरे पाणिग्रहण करिकें सिद्ध भी
नांही हैं सहज याके मो विषें ही आपुनें चित्त विषें में
ही हूं ताते यह कुमारिकान नें आपुनें चित्त में विचार करिकें
ज्यामेरी ही पूजा करत भई हैं माला चंदन के पुष्प के गुच्छा औ
र तांबूल मुख्यत पूर्वक करिकें अत्यंत प्रेम सों आर्द्र चुचात भा
वः करि में व्रज भक्तन के आगें सर्व भाव करिकें सर्व करिकें
२३९ श्लोक निवेद्यं यत्रात्म प्रभृति निखिलं पुष्प तलयः स्व
भावकों द्भासि तपोवि विध रस भूद्रष्ट यस्मा: पुर पूड पश्चाहं
प्रकट इहतत् पूजन मिदं नभूतें नो भावो कसिद पिच नैवा
स्ति स्पृद्रशः २४० याको अर्थ जातें तुम आत्मा प्रभृति कों नैवे
द कीनों और अखिल पुष्प यह जो आपुनें स्वभाव तें उद्भारि
ली विविध रस की भूमि यह एतादृशाद्र एक करिकें पुष्प करि

केंमेरीपूजाकीनीहें मेंइनकेंआगेंयहसाक्षातहूं ता
तेंएताद्रशयहपूजन नकवहूंपहिलेंहती नआगेंकहूं
होइगो औरइनकेंसद्रशअनुभवकेंहूनांहीहें सोसुद्रश
२४० श्लोक अथैषात्रपूर्वपूजायाः फलंकिमुभवेतनु किं
त्वास्याइतिमेंचितेप्रादुरासीद्विचारणाः २४१ याकोअर्थ
अबश्रीठाकुरजीआपुकहतहेंजो तदनंतरइहांपहिलीपू
जा कात्यायनीमहामाये हेंमंतकेंप्रथममासमेंपहलीपू
जाकोंकहाहोतभयोहे औरपाछीपूजाभद्रकालीसमानर्चुः
हेमंतकेदूसरेमासदूसरीपूजा ताकोंकहाफलहोतभयोहे
यहमेरेचितमेंविचारप्रगटभयोहे २४१ श्लोक पूर्वपूजा
फलत्वेनयद्यथेष्टेवकल्पते एतस्याफलमष्टेवभवितुना
न्यदर्हति २४२ याकोअर्थ पहिलीपूजाफलत्वकरिकेंयद्य
पियहीकल्पनाकरीयतहे तोयाकोफलहूयहही और
फलहोयवेकोंयोग्यनांहीहे २४२ श्लोक साधनादधिकमेव
फलंस्यादेकमेवतादृक्कथमेवस्यादितिग्रहीलवान्तिर
त्रसणयुक्तिगतिरस्तुभूते २४३ याकोअर्थ साधनतेंअ
धिकहीफलहोतहेयाकहोतेयहकेसेंयाप्रकारहोइ यह
आग्रहकेवचनहे यहअनुभवविषेंमुक्तिकीप्राप्तिहीए
हें २४३ श्लोक अधुनिवेदनपरमग्रेभोगफलंततोभेदः
भवतितयोरितिनमतंपूजांतःस्याइमद्भोगः २४४ याको
अर्थ अबतोनिवेदनपरिकीयोहे सोआगेंसंभोगफलहे
तातेंभेदहोतहीहेतो तेदोयमेंनिवेदनभोगयहमततनांहीहे
पूजाकेंअंतस्यभीतरहीमेरोभोगहे २४४ श्लोक अद्भुताद्भुत
मद्यैतत्स्वरूपतात्त्रमगोदृशः साधनंतुभवद्धामितेनमेवांछि
तंफलं।२४५ याकोअर्थ हेमगोदृशीहे अबयहअद्भुततेंअ
द्भुतआजयहतें इहांदपतोसाधनसोतुमनेंकीनोहे ताकें
रिकेंमोकोंमेरोमनवांछितफलभयोहे २४५ श्लोक एवंसखि

मन्येहं मदर्थे मेवः कृतो व्रतारंभः यदहं निजवांछितफल
मप्रोमाद्य पसिवामदं २४६ याको अर्थ याप्रकार हे सषिमैंमा
नतहूं जो मेरी को मनो पूरिवे के अर्थ ये तुम व्रतको आरंभ
कीनो है ज्यातें मैं आपुनो मनवांछित फलको अववर्त मां
नपावत हूं और बहुत ही पाऊंगो २४६ श्लोक अपवास्या
यमेवैतद्धूतंकृतामिति धुवं अहमेवभवत्यो यत्तदभूत्स
थितत्फलं २४७ याको अर्थ अथवा तुम आपुने स्वार्थ कों
ही यह तें व्रत तुम कीनो यह निश्चय तो मेंही तुम हूं जाते
ताते ही ते मो विषें ते तुम्हारे व्रतको फल होत भयो है २४७
श्लोक एवं तवपूजनतुष्टोद्दामिवरमेतदित्तरं कुः प्रापं
सततं भवतीनामहम जीसुयुक्तश्चवत्रागम्य २४८ याको
अर्थ याप्रकार तुम्हारे पूजन तें मैं अति ही संतुष्ट भयो हूं
और वरकों ताप्त लहूं हे सखी अरु सारसाधनतें कुः प्राप हूं नि
रंतर रमें तुम्हारो तलपहूं अति संयुक्त हूं और तुम्हारे वस्त्राहू
२४८ श्लोक तस्मिनः ह्यामहासहरं स्वप्यसर्वात्मभावसु
मेन विकासितकुंदैलौकिकन्या स्वरात्रीमुदा हसती २४९
याको अर्थ ता समय रात्रि विषें मो कारि के सायंरमण
करोगे सर्वात्मभावसुलभकरोगे सर्वात्मभाव सुलभक
रिकें महारात्रि केसी है विकसितकुंद करिके लौकिकन्या
रसरात्रि को आनंद सों हंसत है २४९ श्लोक निष्कलंकनिसा
नाथनवोदयदशारूतो किरणैरुणीभूतवनपंक्तिम
नोहरः २५० याको अर्थ निःकलंक निसानाथ जो चंद्रमा नूतन चं
द्रमा उदय और लक्ष्म वस्याकरिकें ता चंद्रमा के किरण
करिकें आरक्त होत भई है मनोहर वसन की पंक्ति २५० श्लो
क मध्यवोदयएवायं माजातकुमुदिनीपते करस्यास्यामे
गुरागारं जितावनपंक्तयः २५१ याको अर्थ यह कुमुदिनी
पते चंद्रमा को मिस करिकें यह चंद्रमा नहीं ह [illegible]

सो किरणके मिसतें जो मे
मूर्त्तिविलासावही उदयभयोहे वनकीपंक्ति २५१ श्लोक
रक्षानुरागतें ही रंजितकीनीहे
भ्रमभ्रमनरज्जुषस कुवलयावली लिर्भबद्विलोचनयु
गेससमुद्रमणमाश्रुभावीतिवे मुदाकथमतीनिजोपलि
तामतां श्रुद्रुत प्रमादभरताभिरुतमरंतभ्रमंचायतः
२५२ याकोअर्थ भ्रमतजोभमरताकरिकेजुषसेवितहे
सकुवलयावली करिके उत्तमकमलपंक्तिकरिके तुम्हा
रेविलोचनयुगविषे मरोरमणबेगिसी घूही निश्चयभा
वीहोनहारहे आनंदसोकहतहे आपुनेंउपरिप्राप्तिभ
मतरूपक्किरण तातें उदयभयोप्रमादहे आनंदकोभर
हे ताकरिकें उत्तमरत आरभ्रमहू आगेंभावी निश्चय
हे पगो २५२ श्लोक कुवलयमकरंदपानो न्मदमधुप
रुता तिमधुरझंकारैः ... मतप्रमुदित
मदानमुक्तारं २५३ याकोअर्थ भ्रमरकोमकरंदपानक
रिकें उन्मत्तभयोजोमधुपकी माहि अत्यंतमधुरझंका
रकरिकेजनाव... तुमकोभ्रमत आनंदितहोयके मे
रागानकोतारस्वरहे २५४ श्लोक प्रतिदलमुन्मदमधुपा
स्थित्यासंसोभिमंडलाकारं प्रत्येकंमवतीनांप्रत्येकंभवती
नांशापयतीरमणमुद्धेल २५४ श्लोके याकोअर्थ प्रत्येकं
कमलकेदल पांखुरीकोंउन्मत्तमधुपकीस्थितहे सोमं
डलाकारसम्यक्शोभतहे ताकरिकें तुमप्रत्येककोंआ
पुनेंरमणकोंउद्वेलकोंउद्धानकोंजनावतहे २५४ श्लोक
अत्यासत्त्यामुकुलितमपिकमलंप्राप्तमिद्धताहासिना
मानाकुंचितताबकनयनकरेध्यनुसतिंमेत्र २५५ याको
अर्थ अत्यंतआसक्तभरमुकुलितकोहू रात्रिकोंमुद्रित
...मलकोंव्याप्तहे जोमिलबेकोइच्छाकरतहे निश्चयक
...रिकें तसेहीसांज्ञकरिकेंआकुंचितहे सकुंचितजो

व्र·टी· तुम्हारेनयनकमलहे औरकैमेकेरेलविषेंहमारेश्रुगुप
र्लकरिकेंरहोहूं मांमकुडोऊंगो २५५ श्लोक आननतन
वतरूपल्लवकुसुमस्तवकेषुसंदतोतानैः मधुपैःसंस
चयती विपरीतरतंकृशोदर्यः २५६ याकोअर्थ आननत
नम्रन तनतरूवृंदकेपल्लव औरफूलकेगुच्छाजोनीचे
मुषहोइरहेहे जोताविषेंसम्यकरतिउतानऊंचेकोभ्र
मरकरिकें सम्यक्विपरीत करिकेंकोऊसूचनकोकरत
हे भ्रमरनीचेकोसुनतवकऊपरतातेंविपरीतरतिहे
सूचियतहे २५६ श्लोक नतकुसुमस्तवकगलन्मकरंद
धारोत्तरेणनमधुपानं सिंचनमिहजलविहृतौसोपय
तीर्मेभवज्ञनितं २५७ याकोअर्थ नीचेनम्रकुसुमकेस्त
बककरिकेंसीचनेकरिके भ्रमरकोयहचिंतनकरतहे
जलयाकरिकें जलक्रीडाकरिके सोतुमकोजनावतहे
जामांकरिकेंतुमामियहप्रकारजलविहारप्रगटहो
यगो यहजनावतहे २५८ श्लोक चंद्रांशुरागव्याजेन
स्मराग्निर्मुकुलेंबने त्रिगुणानिलफूत्कारैःप्रालोद्दीपय
तीनवं २५८ याकोअर्थ चंद्रमाकेकिरणआरक्तकेमि
सकरिकें कंदर्पाग्नि कामाग्निकों बनविषेंउद्दितकरत
हे औरयहत्रिगुणवायकेफूत्कारकरिकें शायनकरिकें
नोतनकामाग्निउद्दीपनकरतहे यहप्रकारक्त चंद्रकिरण
नांहीहे सोतोंकहांहे जोयहनोतनकामाग्निउद्दीपन
कीनीहे २५८ श्लोक यमुनामज्जनसुचिनाप्यतिभवयेना
पिपल्लवस्पर्शे भवदर्थमेवनिखिलंकृतमितिपवनेनसू
चयति २५९ याकोअर्थ श्रीयमुनाजूविषेंमज्जनकरिकें
सूचिपवित्रकेंहूंअतिभयकरिकेंहूं पल्लवकेस्पर्शविषें
सोसर्वतुम्हारेअर्थहीकीनोंहे सोयहपवनकरिकेंसू
चनकरायतुहे २५९ श्लोक पुरादग्धास्यका[illegible]घे

वंभवदङ्गा जीवितस्यानिलव्याजाद्धयती प्राणमारुतं २
६॥ याकेअर्थ पहिलेजोमहादेवनेंजरायोहे दग्धजेर
कंमकोसाताकालहीयाप्रकारकीअवस्थाकोप्राप्तहे जोजीवन
कोंवायकोमिसकरिकें यहवायु नहोयतोकहाहे जोप्राण
मारुतवहतहे कंदर्पफिरिजीवतहोतहे २६॥ श्लोक स
खेत्यक्तानलेनप्रकृतमपिरतिप्राणनाथेनसाकं कृ
त्वामन्येऽनिलोसौवहतियदनलःसोऽरिंस्पतिमत्वा श्रो
त्यंतादृग्वहत्या मानिय दखिलमप्पाशुनिर्वापयेत्तसेयी
चस्वाप्रियाश्र्वेपरिमलधनीजोंतत्सखोक्तिमदः २६॥ याको
अर्थ अनलजोअग्निताकोअनिलजोवायुहे तासोंप्रकृति
सहजसरव्यहतो सोवायुनेंसहजसरव्यछोडिकरिकें र
तिकोप्राणनाथजोकंदर्पतासोंसख्यकीनोहे तबअनि
लएसेंमानतहेजो तबकैमोतजेजो यहवायुनेंसख्य
हे जोयहअग्निवहतहे सोमोकोंतजेकैजो यहअनिलअ
ग्निवहतहे जोज्यातेंअनिलवायुनेंअनलअग्निसोंसह
जसख्यहतो सोछोडिकरिकें कंदर्पसोंसरव्यकीनोहें में
जोंन्योंजोअनिलवयोनिवहतहे जोज्यातेंअनलकोंसोरि
रंसाभईहे जोयाप्रकारअग्निमेंमानिकरिकें अनलए
ताद्रशत्रोत्यंकोवहतहे सोअपुन्यातेंसवहूसोंछुकावें
हे तालेंनेजुअश्रापुनी प्रियाकेअर्थकोपरिमलधनिनोंता
वतिअश्वासकालेंमंदवहतहे २६॥ इक्कसठमेंश्लोकमेंता
त्पर्य अग्निवायुकोसहजसरवामित्रहे सोवायुजललोंत्र
जभक्तनकोंविरहहुतो सोतहांलोंअग्निकेसंगकरिकें
महाअग्निरूपबहुतहीवहतहुतो जबश्रीठाकुरजीआ
पुव्रजभक्तनकोवरदीनोंजो यारात्रिमेंसाथरमणकरूंगो
तबहीवयालिनेंश्रीठाकुरजीकोंओरव्रजभक्तनकोंरिरंसा
मानकरिकें अग्निकोसरवत्वछोडिकरिकें कंदर्पसोंसख्य

व्र·टी करिकें सोई श्वग्निरूपतातीवयारि वऊंतऊती सोईब
यारिए ताहू श्राशीतलवहनलीगी सोसवबुझायडारीहै
श्रीरवश्रामोदकेधरणीयेताक्रोधनवरायकरिकें श्रकितहो
इहे सो प्रियप्रियाकेनिमित्त सोगंधलावतभयोहै २६१
श्लोक मंदानिलामीतिविचित्ररागपरागचंद्रातपचारुम
ध्या: भृंगांगनारंगगलद्विचित्रप्रसूनमालादलकीर्णभू
मी: २६२ याकोअर्थ

२६२ कुलको श्लोक खंजनयुगमप्य
कुवलययुगलंमीनद्वयं [illegible] विमलेविधौतदास्मि
न् कथमपिभवदास्यसाम्यमाप्नोत् २६३ याकोअर्थ दोयखं
जनतदनंतरदोयकमल हे अथवाजोदोयमीनहोय
निर्मलविधौ जो चंद्रमाविषेंजोहोय तवयामेंक्योंहूंक
रिकें तुम्हारे मुखकी समताहोय २६३ श्लोक निशानामा
नंतेऽप्यपियदिनताभासरहिता: क्रमाच्चेत्तस्युस्तर्हिकत
रविधुनार्थः सखिभवेत् मदीयप्रत्यंगोत्तमतमरजन्य
सुनतयेत्वमीवक्त्राब्जानउदितमुदितास्त्वसितकारा:
२६४ याकोअर्थ रात्रिकोअनंतत्वपारत्वविषेंजानमनता
नाशरहिता: जोताकोनाशनहोतो नाशरहितहोती औ
रजोहोतोतोसबएकतरचंद्रमाकेश्रयेहैं सपछहोतिहै
सोमेरेप्रत्येककेउत्तमश्रृंगाररात्रिकोअंधकारतोतेसो
तोनहो याकरिकें यहमुखकेमिसकरिकें उदितभये
तसंतत सितकारकेकिरणहे २६५ श्लोक महंगमे [illegible]धु
तोभवत्यइत्यनुहत्ताणेनसंभवेतहोइसखीइत्यापिदर्पते

त्रव: स्थितिश्च संततं मयी त्वयेनुभावसंचय:कदाचिद
न्यथान भाव्य येमयैव पोषिता॥ २६५ याकोअर्थ श्रीठाकुर
जी आपु कहत हैं जो व्रजभक्तनको जो मेरो अंग है सो मेघ
घनस्याम निविड सजल सघन मेघ है और तुं मेहसो वि
द्युल्लता विजुली हो जा या करिके अनुत्तमाको न संभवे नांही
है संवृत है अहो सखी तुम्हारी दृष्टिरूपता है हातम औ
र तुम्हारी स्थिति साधु भली भांति सो निरंतर है मो विषे याक
रिकें यह तो तुम अत्रापुनो भाव मो विषे सिंचन कीयो है तातें
कदाचित हूं अन्यथा भाव न होइगो सो कहत हें जो मेंही तु
म्हारो यह भाव दृढ कीनो है २६५ श्लोक प्रत्यारदरसिता
पांगोध्वांतेमुखेंदुचयैस्तैश्च भानु पयादिहयतु प्रादुर्भूतेलद
त्रविचारितं गमनसमयेत्रा [illegible] पिधानपटेलभेत त
हेड्सुखं भूयादेवं भवत्कृत [illegible] २६६ याकोअर्थ सर्वत्र
प्रसर समयो है अग्नि... पांक टात करिकें ध्वांत
कोअंधकारको और तुम्हारे मुखचंद्रके सोभा कहेंको तिप्र
कासह्यातें यह अंधकार और प्रकास है सहान अवस्था
विरोधी एकवार प्रगट भये हैं सो ता विषेतें इहां में बि
चारकी नांहि सो श्रीठाकुरजी आप कहत हैं सो कहत हैं जो इ
हां अभिसार करिकें निकुंज विषें जायवे कूं समये तो जैसें
अंधकारकी द्रष्टिपदकों न पावें पगी हूं तदनंतर यह परमसु
खबढत है प्रकास हो जा या प्रकार कें तुम साधन विषें की
ने हो २६६ श्लोक भवदीयदृगंचलस्य गण्यचलेभावमिलेल
भेतहि भवती पुसदैक रूपतेत्यल मुत्कलाति विशुद्धजाति
षु २६७ याकोअर्थ तुम्हारी दृष्टिकें अंचलकें एकस्वर्सपात्र
[illegible] हलें चलभावको निश्चय पाछें और तुम विषे सदा सर्व
दं [illegible] करूपता हो सो या करिकें तातें अब पूर्ण कहत हैं जो
अत्रालंनलि [illegible] छि जात विषे है २६७ श्लोक किमत:परमधि

कं नतु वाच्यं यद्भागवद्योगसंगेन अहमनिजपुंलक्षण 
भावं प्राप्तो स्मि नेतरथा २६८ याको अर्थ कहा याते परम
अधिक निश्चय कह्नो ज्याते तुम्हारे कटाक्षके संगको सिद्धि
मेंहू आपुनो पुलक्षण भावको पावत हूं पुरुषार्थको पाव
तहूं नाही तामें पुरुष स्त्री षंढ को जनाही है सो तुम्हारे क
टाक्षके संगते पुलक्षण भाव है याते अतिरिक्त नाही है २
६८ श्लोक अपि चापांग संगेन तथात्वेका विचित्रता यदे
तत्सम तिरप्यस्मास्वपांगकुरुते स्फुटं २६९ याको अर्थ
और हू तुम्हारे कटाक्षके संगते पुलक्षण होय जो यामें तो
कहा आश्चर्य है जब तुम्हारे कटाक्षको स्मरण इच्छावत है
मो विषे अपांग श्रृंगार रहित करत कर तहू प्रकट है २६९
श्लोक तस्मादधुनायातन्[illegible]भवन्मायतु रोवभात्येषः चं
डांशुः कुवलयकुलसं[illegible]च[illegible]व संकोचः २७० याको अ
र्थ है अबला हैं ता[illegible] अबतुम व्रजमें जोवो जाते चं
डांशु सूर्यके कि[illegible]क[illegible]यह आभासत है सूर्यकी ग
त है और रात्रि विकासी कुवलयके समूह नें संकोच की नो है
चंडांशु के संको[illegible] २७० श्लोक इति निज निजप्राणेशासो
दितवचनमुदा श्रवण पथगे भाविप्रेषं गसंग विनिश्चया
त् यद्वहमुदकूपाराः प्रादुर्भूवुरहो गृह व्रजन सिकताकू
टभयोद्दकाइवतेऽभवन् २७१ याको अर्थ जो या प्रकार सो
आपुनें आपुने प्राणेश प्राणनायकके वचन उदित भए हैं
सो आनंदसों व्रजभक्तनको श्रवण पथ भये सुनें है जाते
आगे भावी होनहार है जो प्राणवल्लभ है प्राणप्रेष्ठके सं
गसंगके निश्चयतें यद्वहमुदकूपाराः तातें प्रकट भयो है
कहा घर जनेकी आसा है सो तो सिकताके कूट पर वन तें
उदकाइव तें हो तए २७१ श्लोक यदीयभावएवासा सर्वेषि
स्मारको भवत् कथं तास्मिन्पुरस्या त्पिन्यहो गोहगतिर्भवेत्

२७२ याकोअर्थ जोआपतें यह श्रीठाकुरजीको भावहीसबे
को विस्मारकहोतहे तोकेसेतेसाक्षात्आगेंठाढेंशास्त्र
यें घरकोंजानोंहियें २७२ श्लोक प्रायोयथातिरसारंगवि
दग्धाततिमुग्धप्रणन्दकवचाल्पपिवीरवपोः श्यांतेपु
रःप्रतिभरेनवतिखेगेहमेवाव्रजंत्यपितयेवसुमध्यमा
स्ताः २७३ याकोअर्थ बऊधाजेसेंअतिशुद्धसंग्रामरंगमें
डयमेंअतिचतुरहें अतिसुंदरकवच प्राणादपहिरिकें
रिकेंहूंसंग्रामविरहमेंश्रेष्ठमुकटमणिहू जवआगिलो
प्रतिभटयोधाशातहोयलडेहोनाहीहें सोतेसुमध्यमा
घरजातभईहे सोव्रजभक्तघरजातभए जोव्रजभक्तोतो
श्रेष्ठसंगमसज्जिताएश्रीठाकुरजीआपुसांतभएहे तातें
कष्टसोंव्रजमेंगहसाएहें २७३ श्लोक तेपियथावीरह
साद्गावधाचुर्येविस्मतान्यरसा[illegible]भादात्तिलभे
तएवंहशादयें २७४ याकोअर्थ येव्रजभक्तहूजेसेंयु
द्धवीजबआचार्यरेंवीरसको[illegible]होतहे तबसब
रसकीविस्मृतिहो[illegible]लोभतेंआर्तिकोपावतहे
जोयाप्रकारय[illegible]सोदयें[illegible]आर्तिकोंपावतभईहें २७४
श्लोक यथाकथंचित्[illegible]कदाचिन्निजांगसंगोविदधातु
नाथं इत्थंचिराद्दृष्टिमवाप्यहृष्टास्तदिक्षयाजगमुरिमाःस्व
गेहं २७५ याकोअर्थ जोजेसेंकोंहूंकरिकें श्रीठाकुरजीको
पायेहें सोजेसेंकवहूंकआपुनेंअंगसंगकोंदेंगेनाथ जो
जेसेंदर्सनदीनोंहें सोतेसेंअंगसंगहूदेंगे जोयाप्रकार
बहुतहीकालतेंश्रीठाकुरजीआपुनोइष्टवांछितमूर्द्धन
अंजुलीबंधनकरिकें वायइष्टप्राप्तिहोइकेंहर्षयुक्तप्र
सन्नभयेहें जोश्रीठाकुरजीआपकीइच्छाकरिकें यहव्रज
भक्तआपुनेंघरजातभएहें २७५ श्लोक वचनाद्धिष्टप्राप्ति
स्तानात्प्रियमभवदालिवचनेयत् तस्मातोगृहगमनेंयुक्ते

व्र.टी. तासांससदास्तातः २७५ याको अर्थ श्रीठाकुरजी आपके
बरदांनरूपवचन तें तो इष्टप्राप्ति भई तातें ही प्रीयहोत
भएहें वचन ज्यातें हें आली तातें ते व्रजभक्तनकुं श्रीठा
कुरजीकी आज्ञा तातें घरजांनो युक्त हे तेव्रजभक्तनसोंकुं र
२७६ श्लोक अहहत्वंजानेप्रियसखिवरस्तुष्यतु भवत्य
स्यन्मानेत्यतिरतिभराक्रांतहृदयाः कृताः प्रागप्येतन्नि
जशिरसिबधांजलिपुटा यथ्याप्रेष्ठैनेवं स्वगृहगतिम
सोपि सपदि २७६ याको अर्थ हेप्रियसखि मेंतोप्रका
रजांनतहुं कहांजो वरजोहेंसो संतुष्ट हे औरकछुहोय
न्य अथवा मतिहोयवेह सो अत्यंत प्रीतिके भारकरिके आ
क्रांत आप्तिहृदयाः जोजेसें पहले ही कीनोहे सोयहतें आ
पुनेंसिरविषें अंजली पुटबांधिजेसें तेसें प्राणप्रेष्ठकरि
कें जायाप्रकार आपनें गृह गतिनिकुं ताकाल २७७ श्लो
क तथात्वेपितपथ्यापुरस्थितइतिप्रियाः मुदिताः सप
दिप्रायस्सदनाय हित्यप २७७ याको अर्थ तथात्वेपि ते
सेंविषेंप्रियकुं सेंधकालकें जायाप्रकारकी आज्ञा तातें गृहति
मंतहुं सवप्राणप्रियआगें ठाढेहें सो याकरिकें प्रियाः तात
कालहीं आनंदितहोयकरिकें बड़धाताकें अभावतें वाहि
रसोंहात रमणकें अभावतें फिरी २७८ श्लोक ततोस्मिन्दे
वमुकुंददलवरापूरात्रिष्वनवद्यभावाः कुमारिकाः प्राण
पतिप्रियाश्च प्रौढाविजहुर्निजवल्लभेन २७८ याको अर्थ
तदनंतर बेगिही मुकुंदको दीनो बर आप्ति रात्रिविषें निर्दु
ष्टभावकरिकें कुमारिका प्राणपति और प्राणप्रिया दोऊ
अतिप्रौढहोय जोतेसें आपुनें प्राणतें अत्यंत वल्लभ क
रिकें निर्भर विहार करत भएहें २७९ श्लोक इत्येन्यत्संप्रा
प्येवरामिह वरवर्त्तिकिमुनः सदस्यस्वामिन्यः पुलिनमु
लकुंजरसभुवं मुदासंगेस्माकं तच्चरणारजसा चास्तु रमणा

मुकुंदसर्वोत्तम

२८० याको अर्थ अब श्रीगुसांईजी आप कहत हैं जो यातें
अनन्तर सम्यक् प्रार्थना वरको यह वरी वार्त्ति कि मुनः या
तें अपेक्षक होहे सदा सर्वदा निरंतर हमारी श्री श्री स्वामिनी
जू श्री यमुना पुलिन को उत्तल कुंज को यह रस भूमि को परमा
नंद सों आपुने संग विषें मोको के सों सम्यक् आइ कें श्रीठा
कुरजी आपु रमण करो तो और कहुं हम को तुम्हारे सब के
चरण की रज विषे रमण होउ २८० श्लोक इति श्रीमद्गोपी
जन चरणदास्याभि महापुरुषार्थ्यावाप्ते वाद्भित सकल मो
ह्याभि रुदितं मदीयात्म प्राणेंद्रिय हृदय देहेषु सततं स्वयं
भूयादेतद्व्रजनरस सर्वस्वममलं २८१ याको अर्थ इति
श्री मद्गोपीजन के चरण को दास्य है सो अभिधान नाम जा
को सो दास्य ही महा बडो पुरुषार्थ ताकी प्राप्ति हा करिकें छांडे
सकल मोह्य अभि उदितं मेरो आत्मा प्राण इंद्रिय हृदय
देह विषे निरंतर स्वामि प्रकट होय जो व्रजजन को रस सर्वस्व निर
मल २८१ श्लोक इति मद्व्रजवधूवधमांघ्रिरज्ञोर्थिना
रचितं रससर्वस्वं विठ्ठलेनाथपूर्णता २८२ याको अर्थ इति
श्रीमद्व्रजवधूनके श्रीआवल्लभ के चरण कमल के रज को
अर्थी नें रचित कीनो है रस सर्वस्व कूं यह ग्रंथ व्रतचर्या को
नाम को श्री विठ्ठलेश्वर करिकें पूर्णता को प्राप्त भयो है २८२
इति श्री विठ्ठलेश्वर विरचिता रससर्वस्व व्रतचर्या ताकी टी
का भाषा में समाप्ता ।।

॥श्रीकृष्णायनमः॥श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥अथसंन्यास
निर्णयग्रंथश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकीएहैताकीटीकाभा
षामेंलिख्यते॥अबयहसंन्यासनिर्णयग्रंथहे॥तामेंभक्तिमा
र्गकोसंन्यासवर्णनहें॥सोश्रीहरिराइजीदोइश्लोककरिकें
श्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजीसोंप्रार्थनाकरतहें॥काहेतेंप्रथ
ममंगलाचरणश्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजीकोंकीएहें॥इन
कीकृपातेंयहसंन्यासनिर्णयग्रंथअतिगूढहे॥ताकोभाव
हृदयारूढहोइ॥तबटीकाकरीजाइ॥काहेतेंयहपुष्टिमार
गकेप्रगटकर्त्ताश्रीआचार्यजीमहाप्रभूहें॥औरयहभक्तिमा
र्गकोप्रकासकर्त्ताश्रीगुसांईजीहें॥तातेंदोउकीकृपातेंसकलम
नोरथसिद्धहोंइगे॥तातेंदोइश्लोककरिमंगलाचरणकरि
यतहें॥श्लोकःश्रीमदाचार्यरूपस्यवक्तृत्वंनिरूप्यते॥स्वकीयानां
कृपालुत्वंचरणरेणुंनमस्तोः॥१॥श्रीविठ्ठलंकृपासिंधूयुग
पादममासिरं॥भक्तिसंन्यासकौसिद्धमार्गप्रवर्त्ततं॥या
कोअर्थ॥ ॥अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनसोंप्रथमश्रीहरि
राइजीनमस्कारकरतहें॥सोजबश्रीहरिराइजीमंगलाचरन
करनलागे॥तबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुहृदयारूढहोइकें
दर्सनदीए॥तातेंप्रथमश्रीहरिराइजीयहकहे॥श्रीमदाचा
र्यरूपस्यऐसेपरमसुंदरकोटिकंदर्पलावन्य॥ऐसेमहा
प्रभूप्रगटहोइकेंवेदकोंमाथ्यकेंसारतत्वजोपुरुषोत्तमके
नामगुणस्वरूपलीलादिककोवर्ननकीए॥औरश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभूकेसेहें॥अपनेस्वकीयजनकेऊपरकृपादृष्टि
राखतहें॥ऐसेपरमदयालतिनकेचरनकमलकीरेनु
हें॥सोतिनकोंमेंअत्यंतप्रीतिसहितनमस्कारकरतहों॥
काहेतेयहचरणकमलकीरेनुअपनेस्वकीयभक्तजेहें॥
तिनकोंसर्वसिद्धदेबेकोंकारणहें॥तातेंचरनकमलकी

संन्या· रेंनुकोंनमस्कारकरतहें॥ ओरश्रीआचार्यजीकेआत्मजश्री
१ विठ्ठलनाथजीसोपरमकृपाकेसागरहें॥ महापतितअध
मजीवनपरकृपाकरिपुष्टिरसकोदानकरतभए॥ता
तेजेसेकारनरूपश्रीआचार्यजीपरमकृपालहें॥तेसेई
कारनरूपश्रीगुसांईजीपरमदयालहें॥सोउचितईहे
जेसोकारणहोइ॥ तहांतेसोकार्यप्रगटहोतहें॥सोदो
उजनेकृपाकरिकेंअपनेचरनकमलमेरेमस्तकप
रधरो॥काहेतेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभूभक्तिमार्गप्रगट
कीए॥ताकेविस्तारकरिबेमेंतत्पररहो॥सोभक्तिमारग
कोसंन्यासश्रीआचार्यजीमहाप्रभूकीएहें॥सोतुमप्रसि
द्धजगतमेंसेवामार्गप्रगटकरिसबकोंप्रसिद्धदर्सन
कराएहो॥ यहकार्यतुमहीसोंहोइ॥ ओरसोंनहोइ॥तातें
तुमअपनेदोऊचरणनकोंबिदूसरेमाथेपरअनुग्रहक
रिकेंधरो॥ताकरिकेमेरेसकलमनोरथपूरनहोइंगे॥
मेंयहसंन्यासनिर्णयकीटीकामेंप्रवर्त्तभयोहूं॥सोकृपा
करिकेंभावकोहृदयमेंसंपादनकरो॥यहबिस्वासतें
मेंटीकाकरतहों॥याप्रकारदोयश्लोकसोंप्रार्थनाकरिकें
अबप्रथमश्लोकसंन्यासनिर्णयकोंकहेतहें॥श्लोक॥पश्चा
तापनिवर्त्यर्थंपरित्यागोविचार्यते॥समार्गेद्वितीयेप्रोक्तो
भक्तौज्ञानेविशेषतः॥१॥याकोअर्थ॥ अबयहपुष्टिमार्गमेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभूनकेसेवकनमेंकोईवैस्नवकेमनमें
यहसंदेहहोतहें॥जोअपनेपुष्टिमार्गमेंश्रीआचार्यजीम
हाप्रभूगृहस्थाधर्मकोत्यागनांहीबताए॥तातेंगृहकोंहम
केसेंछोडें॥सोगृहमेंतोअनेकप्रकारकेदुखहें॥सोगृहछोर
केंसंन्यासधर्मकरिकेंकृतार्थहोते॥सोअबहमकोंदोउक
ठिनहें॥जोगृहकोत्यागकरिएतोश्रीआचार्यजीमहाप्रभूके

पुष्टिमार्गसोंबिरोधहोइ॥औरजोगृहमेंजोरहिएतोश्रीठाकु
रजीकीसेवास्मरणनबनिआवे॥तातेंहमकोंदोउओरको
संकटपस्योहे॥याप्रकारकोईवैष्णवकेहृदयमेंसंदेहहो
इ॥ताकेनिवर्तार्थश्रीआचार्यजीमहाप्रभुग्रंथकीएहें॥का
हेतेंजहांसंदेहहोइ॥तहांभगवद्सेवामेंउद्वेगहोइ॥पा
छेंसेवामेंप्रतिबंधहोइ॥तबआलस्यहोइ॥तबताजीवसों
भगवद्सेवानबनिआवे॥ताकीगृहासक्तिरूनछूटी॥त
बमनमेंपश्चातापहीरहे॥जोमेरोउद्धारअबकैसेंहोइगो
सोपश्चातापसंदेहसबयहग्रंथमेंदूरिकरतहें॥काहेतें
वैष्णवकोंगृहादिकमेंअनेकभांतिकोदुखपायकेंवै
राग्यआवे॥तबगृहकोंछोडिकेंबाहिरजाय॥कहूंअन्य
मार्गमेंप्रवर्तहोइजाइ॥तोभ्रष्टहोइजाइ॥काहेतेंश्रीठा
कुरजीधर्मीसरूपकीसेवाछोडिकेंभगवानकेधर्मकों
आश्रयलेइ॥तोमेंअनेकप्रतिबंधहें॥सोआगेंबर्ननकरें
गे॥सोकाहेतेंबेदमेंतीनमार्गकहेहें॥मुख्यअत्यंतदुर्लभभ
क्तिमार्ग॥१॥दूसरोज्ञानमार्ग॥२॥तीसरोकर्ममार्ग॥३॥सोक
लिकालपाइकेंकर्मसधेतोनष्टभयो॥काहेतेकर्ममेंतोख
रचजायतोतीनसमयबेरमाटीलगायकेंहाथधोवे॥तीन
समयकुलाकरे॥इत्यादिकसगरोजनमबीतजायपरिस्त्री
कोकोसभावसोंएकहूवारअवलोकनकरे॥तोवाकोंबहो
तप्रायश्चितकरनोंपडे॥सोकलियुगमेंएककोप्रायश्चितकरि
बेजायतहांताईदूसरोदोषओरअनेकप्रकारकेलागे॥
याप्रकारसगरोदोषरूपहे॥सोप्रायश्चितकहांताईकरेगो
॥तातेकर्ममार्गयहकालमेंसिद्धनाहीं॥औरज्ञानमार्गय
हसोऊयहकलियुगमेंकाहूतेसिद्धहोतनांहीं॥सोआगें
श्लोकमेंज्ञानकोप्रकारऔरभक्तिकोप्रकारसबविस्तारसों

सन्या· कहेंगे॥ अब दूसरो श्लोक कहे तहां॥ श्लोक॥ कर्ममार्गे न कर्तव्यः सुतरां
२ कलिकालतः॥ अतः आहो भक्तिमार्गैः कर्तव्यत्व विचारणा॥ २॥ याको अ
र्थ॥ ॥ कर्ममार्ग तो यह कलिकाल जांनि वैस्नवकों निश्चय यहां कर्त
व्य नांहीं॥ सर्वथा बाधक रूप है॥ और भक्तिमारग आदि है॥ सो तो प्र
सिद्धि है॥ जडभरथ को तीनि जनम भयो॥ परंतु भक्ति न गई॥ औ
र अजामेल पूर्वजन्म को वैस्नव हतो॥ कछू अपराध तें दुसंग पा
य वेस्या के घर गयो॥ महापाप न कीयो॥ परंतु भक्त बीज के नास
नांहीं॥ सो मरती वेर अपने पुत्र के ममत्व करिकें नारायन नांम
लीयो॥ ता पाछें जमदूतन के बंधन छूटि गए॥ और भगवत्पा
रखदन कों दर्सन भयो॥ सो जाके नांम को यह प्रताप है॥ ऐसे प्रभु
की सेवा करिए॥ या बराबरि कोई धर्म नांही है॥ यह निश्चय ही जांन
नों॥ तहां कोई कहे जो वेद में तो ज्ञान कर्म हू करिकें प्रभु पाइ
वे के मार्ग बताए हैं॥ सो वेद तो वचन हैं॥ सो श्रीठाकुरजी को स्वासा
रूप है॥ सो वेद हैं॥ सो प्रभु के वचन कों कैसें न मांनिए॥ और तुम कह
हे कर्ममार्ग ज्ञानमार्ग नांहि कर्तव्य है॥ केवल भक्तिमार्ग कर्तव्य है॥
यह विरोध परत है॥ या प्रकार कोई कहै॥ तहां कहत हैं जो पुष्टि
मार्गीय भक्त है॥ सो प्रभु की कृपा ता बिचार करिकें मानत हैं॥ काहे
तें प्रभू के बचन अनेक प्रकार के हैं॥ कबहूं मर्यादा बोलत हैं॥ सो
भगवद्गीताजी में कहे हैं॥ अर्जुन प्रति॥ ज्ञान कर्म योग सांख्य
सगरे धर्म कहे॥ सो मर्यादा और फेरि आप कहे॥ सर्वधर्मान्परि
त्यज्य मामेकं सरणं व्रज ते॥ यह सगरे धर्म कों छोडाय अपनो
सरण बताए॥ यह पुष्टि वचन सों भक्तन कों इत्यादिक वचन
मांनें तो भक्ति होइ॥ मर्यादा के वचन भक्तन कों मानने नांहीं॥ सो
रासपंचाध्याई में भगवान बन में जाय कें वेनुनाद करि भक्त
नकों बुलाए॥ सो भक्त आए॥ तब प्रभु मर्यादा वचन कहि उनकी
परिक्षा लीए॥ जो तुम यह रात्रि विषे अपने पति पुत्रादिकन की

सेवा छोडि कौं आंई । अब आउ ॥ सो वचन भक्तननें नाही मानें
पाछें रासक्रीडा करिहां न ही रे । पाछें सब सुख भयो ॥ तेसें वेद
में अनेक वचन हें ॥ सो अनेक प्रकार के अधिकारी हें ज्ञानी
कों ज्ञान के बचन हें ॥ योगी कें योग के वचन कहे हें ॥ कर्मी कों क
र्म के बचन कहे ॥ भक्तजन कों भक्त के बचन कहे हें ॥ सो प्रभु कों
ई मर्यादा के बचन भक्तन कों कहे ॥ तो भक्त अपने मन में यह
जानें जो मेरी परिक्षा लेत हें ॥ मो कों भक्ति छोडनी नाही ॥ जो भ
क्ति छोडेंगे तो सगरो धर्म जायगो ॥ या प्रकार अपने मन नें
निश्चय होइ भक्ति करनी ॥ तातें सर्व धर्म के धर्मी रूप श्रीठाकु
रजी तिन कों भजन पुष्टिमार्गीय वैष्णव कों कर्त्तव्य हें ॥ सग
रे धर्म हें ॥ सो प्रभु के आश्रित हें ॥ भगवान सुतंत्र हें ॥ काहू ध
र्म के बस नाही ॥ ऐसे धर्मी केवल भक्त के करि ही बस हें ॥ या भां
ति धर्मी कों श्रेष्ठ जानें ॥ और भगवान कों माहात्म्य जानें ॥ जो
इन के चरन कमल की सेवा न ते सगरे धर्म सिद्ध होइ चुके
या भांति प्रभु को माहात्म्य अपने हृदय में जानें ॥ तब भग
वान में स्नेह उपजे ॥ या प्रकार यह श्लोक में निरूपन भयो
जो कर्म मार्ग ज्ञान मार्ग योग मार्ग सब तें श्रेष्ठ एक भक्ति
मारग हे ॥ सोई कर्त्तव्य हें ॥ अब और श्लोक कहत हें ॥ श्लोक
॥ श्रवणादि प्रसिद्ध्यर्थं कर्तव्यश्चेत्स नेष्यते ॥ सहायसंगसा
ध्यत्वात्साधनानांच रक्षणात् ॥ ४ ॥ या को अर्थ ॥ ॥ अव कहत हें ॥
जो पुष्टिमार्गीय वैष्णव हें ॥ सो और मार्ग में को ईयं उचित होइ
तासों मिलनों उचित नाही ॥ काहे ते अन्यमार्गीय के संग तें
यह जीव कों दुर्बुद्धि होइ जाइ ॥ अपने मार्ग में अनन्यता हे ॥
सो जाय तो पुष्टिमार्ग को फल या कों प्राप्त न होइ । तातें पुष्टि
मार्गीय होइ तिन हीं के पास रहि कें वार्ता श्रवणादिक करे
तो वाधक न होइ ॥ और पुष्टिमारगीय वैष्णव हें ॥ जो सेवा के

योग्य न होइ॥ ऐसो सिद्धांत कहे॥ तो सुनें जो भगवद् सेवा तें औ
र कोई साधन बतावे तो ताकी कथा श्रवन करनी योग्य नां
ही हें॥ जाको स्नेह सेवा में न होत होइ॥ तावें स्नेह वसों श्रवन आव
श्य करे॥ ताकरिकें सेवा में अधिक रुचि होइ॥ सगरे प्रकार से
वा को जानें॥ ता तें जाको मन भगवद् सेवा में आसक्त हें॥ ता
ही के मुख तें श्रवन करनों॥ ताही को संग करनों॥ काहेतें
अन्य मारगीय को भाव भगवद् सेवा पर नांही हें॥ सो तें जो
न को मुख्य निरूपन करे॥ कर्म मार्ग को निरूपन करे॥ तथा
अनेक अवतारादिकन कों मुख्य सिद्धांत करि निरूपन
करे॥ तथा चारि प्रकार की मुक्ति सारूप्य सालोक्य सामिप्य
सायुज्य॥ इत्यादिक को निरूपन करे॥ तथा चतुर्थ पदार्थ
अर्थ धर्म कांम मोक्ष इत्यादिक को निरूपन करे॥ और अ
नेक कों मनां करि स्व[illegible]क सुख करि सिद्धांत कहे॥ ऐसे
के मुख तें श्रवण करनों नांही॥ ताको संग करनों नांही॥ जीव
की बुद्धि भ्रष्ट होइ॥ कोमल मन अन्य मारगीय के धर्म में प्रवर्त्त
होइ जाइ॥ तो याकी बाल लता छूटि जाइ॥ तो पुष्टि मार्ग तें भ्र
ष्टि के भ्रष्ट होइ जाइ॥ ताते सुमार्गी को संग करि श्रवण दि
क करे॥ यह ही मुख्य धर्म हें॥ काहेते सास्त्र में श्रवण द्वारा भक्ति
कही हे॥ भक्ति को प्रथम सिद्धि श्रवण हे॥ काहेते श्रवण भए
ते भगवांन के स्वरूप को महात्म्य या के हृदय में आवे॥ यह
लौकिक संसार में वैराग्य होय॥ तब भगवद् सेवा में मन
को उद्वेग न होइ॥ स्नेह पूर्वक अपनो भाग्य मानिकें करे॥ औ
र मर्यादा मार्ग के साधन में यह हे॥ क्रम जो प्रथम श्रवण
कीर्त्तन इत्यादिक करत करत नवधा भक्ति या को होइ॥
पाछें कृतार्थ होइ॥ सो क्रम भक्ति मार्ग में नांही हें॥ यह पुष्टि
मार्ग में तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरनि आयो॥ तब नां

मदेतहींआत्मनिवेदनकरावतहीं।प्रेमलक्षणाभक्तिको
दानभयो।इहांकछुश्रवणकीर्त्तनकीअपेक्षानांहीहे।भग
वद्सेवाकोअधिकारभयो।यहपुष्टिमारगमेंसाधनकी
अपेक्षानांहीहे।केवलप्रमेयबलसोंदानदेतहें।औरम
र्यादामार्गमेंश्रवणकीर्त्तनकरे।तबस्मरणकीयोग्यताहो
इ।याभांतिक्रमसोंएकएकएकभक्तिअतिकठिनतासोंहो
इ।औरएकजनमपर्यंतनेंमसोंश्रवनकरे।तोदूसरेजन
ममेंकीर्त्तनकोअधिकारहोइ।फेरिदूसरेजन्ममेंश्रवण
कीर्त्तननेंमसोंजन्मपर्यंतसिद्धहोइ।तबस्मरणकीयोग्य
तातीसरेजनममेंहोइ।याप्रकारअनेकजन्ममेंनवधा
भक्तिक्रमकोंसिद्धहोतहे।पाछें[illegible]होइ।औरबीच
मेंकोईभक्तिकेसाधनमेंअंतरायपरेतोकछुकजनम
औरफलेइ।यहमर्यादामार्गमेंप्रमानहें।औरपुष्टिमार
गमेंप्रमाननांही।केवलप्रमेयहे।जहांजीवश्रीआचार्य
जीमहाप्रभूनकीसरणआवे।तहांआत्मनिवेदनमहा
प्रभूकरायदेतहें।पाछेंभगवद्सेवाकरेतोसख्यहोइ।
।पाछेंप्रेमलक्षणाभक्तिहोइ।तातेंआत्मनिवेदनजीवकों
श्रीआचार्यजीमहाप्रभूद्वाराभयो।तहांयहजीवकोंश्रवण
कीर्त्तनकीअपेक्षारहीनांही।केवलभगवद्सेवाकरे।ताही
तेंप्रेमलक्षणाभक्तिहोइगी।औरआत्मनिवेदनकीयेपा
छेंभगवद्सेवाछोडिकेंश्रवणादिकभक्तिमेंआसक्तहो
इतोनीचेंउतरयो।आत्मनिवेदनकीएतेसातमीभक्तिआ
पुहीतेसिद्धिहोइचुकीहे।तातेंभगवद्सेवाहीप्रेमसंयु
क्तकरे।यहीमुख्यसिद्धांतहे।यहमार्गमेंतातेंमुख्यश्रव
नकोअधिकारमर्यादामारगीयकोहे।पुष्टिमार्गीयकोनां
हीं।तहांकोईकहेजोपुष्टिमार्गीयवेस्नबकुंश्रवणादिक

सन्या· करतहें॥सोजहांतहांप्रसिद्धदेखियतहें॥औरश्रीआचार्य
४ जीमहाप्रभुश्रीगुसांईजीकथाकहेतहें अपनेवैष्णवनकों
सुनावतहें॥सोश्रवणकोअधिकारहीनांही॥पुष्टिमार्गीय
कोंतोकथाकहिकेंश्रीभागवतकोनिरूपनकाहेकेलिऐं
कीएहें॥कोईयाप्रकारकोसंदेहकरे॥तहांकहेतहेंजोपुष्टि
मारगीयकोश्रवणन्यारोहे॥मर्यादामारगकोश्रवणन्या
रोहे॥काहेतेपुष्टिमार्गमेंश्रवणभक्तिकीमुख्यतानाहीहें॥के
वलभगवदसेवाहीकीमुख्यताहे॥काहेतेप्रथमभगवद
सेवाकरिकेंअनोसरश्रीठाकुरजीकोंभयो॥पाछेंअवकास
होइतोतादिनश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकथाकहेतहें॥से
उकथामेंयहसिद्धांतकरतहें॥जोवैष्णवकोंभगवदसे
वामेंअधिकरुचिउपजे॥तातेंसेवाकेसमयसेवाछो
उकेंकथाकहेनोंसुननतोंनाहीं॥सेवापीछेंसुननी॥याप्र
कारपुष्टिमारगमेंश्रवणहोतहें॥सोसेवामेंरुचिबढे॥ता
हीअर्थहें॥औरमर्यादामार्गमेंश्रवणहीमुख्यहे॥सेवाको
प्रकारकोईजानतहीनांहीं॥तातेसेवामेंकाहूकीआस
क्तहेनांहीं॥याप्रकारपुष्टिमार्गीयभक्त॥मर्यादामारगी
यभक्तमेंतारतम्यहें॥तातेंपुष्टिमारगीयजोभक्तिहें॥
तिनकोंभगवदसेवाछोडकेंजोअन्यमारगीयसोंमि
लेतोअन्याश्रयहोइ॥भक्तिमार्गतेजातरहे॥याप्रकार
तीनश्लोककोनिरूपनभयो॥३॥तहांअबवादीप्रश्नकरत
हें॥जोसास्त्रमेंकहेहें॥जोघररहेसोअधियारोकूपहे॥सग
रेधर्ममेंबाधककरतहें॥तातेंघरछोडिकेंसंन्यासलेइ
तबहीकृतार्थहोइ॥घरमेंतोकामक्रोधअनेकप्रकारको
विषयअनेकजीवनकोंसंगलौकिकसबलोगनकीकां
निकरनोपडे॥सोयहजीवतोजोकृतकरे॥तारूपहोइजाइ

तवगृहमेंकृतार्थकैसेंहोइ॥ औरआगेंहूबडेबडेज्ञानीघ
रछोडेहें॥ तबहीभगवद्प्राप्तिभईहे॥ सोप्रसिद्धसास्त्रमें
श्रीमद्भागवतमेंहूकहेहें॥ औरगृहमेंअनेकप्रकारके
दुखहें॥ जादुखकरिकेंभगवद्स्मरणहूनहोइ॥ अनेक
प्रकारकेदुखपावे॥ तहांकृतार्थकैसेहोइ॥ औरतुमतोय
हीसिद्धांतनिश्चयकीयो॥ जोघरहीमेंरहिकेंभगवद्सेवा
करे॥ सोकैसेंसिद्धहोइ याप्रकारवादीआसंकाकरें॥ तहां
कहेतहें॥ श्लोक॥ अभिमानान्नियोगाच्च तधनैश्च विरोधतः
गृहादिबाधकत्वेनसाधनार्थंतथायदि॥ ध॥ याकोअर्थ॥ अ
वकहेतहेंजोसंन्यासीभयो॥ गृहस्थाधर्मकोंछोडिकेंअेकां
तमेंजायबेठ्यो॥ सोजगतमेंतोवाकीबडाईबहोतहीहोइ॥
सोकोंमनाभस्योसंसारीलोगवाकेंपासबहोतआवे॥ सोव
हसंन्यासीकीबडाईलोगबहोतकरें॥ तबवहसंन्यासीअ
पनीबडाईसुनिकेंमनमेंबहोतप्रसन्नहोइ॥ तबवहसं
न्यासीकेमनमेंअभिमानउपजे॥ औरसंन्यासीकोंतोअभि
मानअहंकारकोत्यागकीयोहे॥ काहेतेंसास्त्रमेंयहसंन्यास
धर्मकीरीतिकहेहें॥ जोसंन्यासगृहनकरिकेंसगरेतीर्थ
नमेंपर्यटनकरिकेंअपनेअनेकपापहें॥ तिनकोंदूरिक
रे॥ याप्रकारजन्मभरिकरिसबसाधनकरिसिद्धहोनेको
समयआयोहे॥ सोऐसेसुद्धसंन्यासीकोंहूरंचकहूजोअ
भिमानआवे॥ तोवहसंन्यासीकोंजन्मभरकोसाधनकीयो
सोसर्वधर्मनष्टहोइजाइ॥ फेरिवहसंन्यासधर्मतेंभ्रष्ट
भयोजानेंनों॥ औरगृहासक्तिमेंअनेकदुखपायकेंसंन्या
सगृहनकीयो॥ भगवानकेलिएगृहमेंअनेकसुखहते
सोवैराग्यकरितोछोड्योनांही॥ औरइंद्रीतोकोईबसभई
नांही॥ ऐसोसंन्यासीतीर्थनमेंपर्यटनकरिबेकोंनिकस्यो

सोखांनपांनकीपीड़ातोयासोंसहीजातनांही॥तबखांन
पांनकेलिऐअनेकपाखंडकरे॥अनेकधर्मकरिलोगन
कोंदिखावें॥तहांकोईग्रहस्थसंन्यासीजोनिखांनपांन
कोंउपायबतायदेहि॥तबवहसंन्यासीप्रसंन्नहोइ॥त
हांअनेकदुसंगसंन्यासीकोंआयकेंमिले॥कोईस्त्रीकोसं
गहोइजाइ॥तथाकोईविषईकोसंगहोइजाइ॥तबहीवि
षयमेंलीनहोइजाइ॥याप्रकारपूरणवैरागपरग्रहसें
भऐबिनाग्रहस्थाधर्मकोंछोडिकेंसंन्यासलेहि॥सोनिश्च
यभ्रष्टहोइ॥यामेंसंदेहनहीं॥औरग्रहस्थाश्रममेंरहतो
विषयकोदुःखनपावे॥घरमेंअपनीस्त्रीसोंविषयकरे॥
॥परस्त्रीसोंभोगकरेतोग्रहस्थकोंमहादोषहे॥तातेंअ
पनीब्याहीस्त्रीसोंभोगकरे॥ग्रहस्थमेंअनेकप्रकार
केदुखपावे॥तउग्रहस्थत्यागनकरे॥मनकोंधीरजधरें
भगवद्सेवास्मरणजितनोंबनिआवेतितनोंकरे॥पर
तुग्रहमेंतेउदासीनहोइकेसंन्यासनाहीलेइ॥काहेतेंसं
न्यासलेइ॥योगसाधननकरे॥तहांअभिमानआवे॥का
हेतेंयोगतेंऔरअभिमानतेंआपुसमेंविरोधहोइ॥का
हेतेंयोगकेसाधनमेंतोकाहूविषयादिककोसंगकरनोंनां
हींकर्तव्यहें॥सात्वकअन्नआधोउदरभरेइतनोंहीखाइ॥सो
इंद्रियादिकहे॥सोयासाधनकेवैरीहें॥उनकोविषयही
प्रियहे॥सोजहांदेसपरदेसएकांतमेंसंन्यासीसाधन
करे॥तथायोगसाधनसाधे॥तहांकोईदुसंगयहकलि
युगमेंआयमिले॥विषयादिकसुखखांनपांनराजसी
लोगनकेमिलनेतेप्राप्तहोइ॥तबयहसगरीइंद्रीपुष्ट
होइ॥सोविषयचाहे॥तबअनेकउपायपरस्त्रीकोकरे॥
सोप्राप्तभऐतेभ्रष्टहोइजाइ॥काहेतेप्रथमतोइंद्रीनकों

जीसोनांही॥ तातेंबिषयकेमिलेतेंतत्कालविषयमेंलीनहो
इजाइ॥ याप्रकारबिचारिगृहादिककोंदुखसबसहेंनक
रें॥ गृहमेंजितनोंधर्मबनिआवेतितनोंहीकरें॥ परंतुघर
कोंछोडेंनांही॥ याप्रकारचारिश्लोककोनिरूपनभयोहे॥
ध॥ तहांबादीकहेजोश्रीभागवतमेंकहेहें॥ जोगृहादिककोंछो
डेतबहीभगवांनमिलें॥ ध्रुवजीजबघरकोंछोडिकेंबनमें
गए॥ तहांभगवांनमिलें॥ औरघरमेंरहिकेंअनेकदुःख
सहेतेतोभगवत्प्राप्तिकेसेंहोती॥ औरश्रीभागवतमेंन
वमस्कंधमेंबडेबडेराजाजिनकोंगृहमेंसबसुखहे॥ सो
अपनोंअपनोंघरछोडिभगवांनकेमिलबेकेलिए॥ व
नमेंगए॥ जोगृहमेंउनकोंभगवांनमिलतेतोउनकोंऐ
सोसुखराज्यादिकसबकाहेकोंछोडते॥ औरतुमकहेघ
रहीमेंरहेसेवाकरें॥ याप्रकारकोइसंदेहकरे॥ तहांकहतहें
श्लोक॥ अग्रेपिताद्रसेरेवसंगोभवतिनान्यथा॥ स्वयंचवि
षयाक्रांतःपाषंडस्यात्तुकालतः॥ याकोअर्थ॥ अबकहतहें
जोगृहादिकमेंदुःसंगपासकेगृहछोडे॥ औरपूर्णबेराग्य
जाकोंनहोइ॥ सोजहांजायतहांभ्रष्टहोइ॥ काहेतेंयहविचा
रअपनेमनमेंनांहीकीयो॥ जोमेरीआसक्तितोलौकिकते
छूटीनांहीहें॥ मेरीइंद्रीदमननभईनांही॥ मेंघरछोडिके
तथाबनमेंतथाऔरदेसमेंजांउगो॥ सोमोकोंखांनपांन
विनातोचलेगोनांही॥ सोखांनपांनकेलिएअनेकप्रकार
केजीवनसोंमिलनोंपरेगो॥ सोअनेकप्रकारकेलोगनके
मिलेतेंदुर्बुधिहोइगी॥ काहेतेंजहांजायतहांताद्रसीबेस
बकोमिलनोंतोअतिदुर्लभहे॥ जहांतहांअन्यथासंगमि
ले॥ औरअपनेहृदयमेंअनेकदुर्बासनाभरीहें॥ ताकरि
केंएकदिनमेंपाषंडीहोइजाय॥ ध्रुवजीआदिगृहकूंछो

स॰टी॰ उ सो उनकों दृढ विस्वास भगवद्धर्म बिना और कार्य कछु
६६ देह इंद्री संबंधी नांही कीए ॥ और जडभरथजी कों पसुम्हो
करि तीन जन्म भए ॥ और बिनां दृढ वैराग्य ग्रहादिक कों छो
डे सो भ्रष्ट भए ॥ और राजा ने देस राज ग्रह छोडे ॥ सो सतयु
ग त्रेता द्वापुर इनमें साधन करि कोई कोई कृतार्थ भए
या कलियुग में महादोषरूप जीव सो साधन कछु बनें
नांही ॥ कुसंग करि भ्रष्ट होइ ॥ और घर में रहे ॥ गुरुसेवा भ
गवद्सेवा वैस्नवसेवा मन लगाय के करे ॥ ग्रहादिक में
मन न राखे ॥ दुखकुं अनेक पावे ॥ परंतु घर कों न छोडे ॥
काहे ते खांन पांन बिनां चले नांही ॥ जहां जाय तहां जगत
में खांन पांन कों उपाय करे सो पाखंड करे ॥ तब लोकन में
प्रसिद्ध होइ ॥ तब ही खांन पांन चले ॥ या भांति निश्चय ही भ
ष्ट होइ जाइ तातें म[illegible]नी[illegible]की इंद्री वस नांही भई
सो घर न छोडे ॥ [illegible] सिद्धांत [illegible] श्लोक में निरूपन भयो
॥ तहां अब [illegible]सका करत हैं ॥ जो तुम तो ग्रहादिक में
रहि के भगवद्धर्म करो ॥ यह निरूपन कीऐ ॥ परंतु ग्रह
स्थाश्रम में कालको ऐक घरी अवकास नांही ॥ जो भगव
द्धर्म करे ॥ ऐसो बंधनरूप घर में रात्रि दिन पचे जो न प
चे तो ग्रहस्थाधर्म खांन पांन बिनां कैसें चले ॥ तब ग्रहादि
क के काम ही में सगरो जनम बीत जाय तो कृतार्थ कैसें हो
इ ॥ और यह मनुष्य देह तो महाउत्तम हैं ॥ बारंबार आवे नां
ही ॥ ताते ग्रहादिक कों छोडि के तीर्थादिकन में जाइ ॥ तहां य
ह जीव संन्यासी होइ ॥ तब याकों कछु लौकिक कार्य करनो न
पडे ॥ तहां भगवद्धर्म ही करेगो ॥ तहां लौकिक कछु बंध
न नांही हैं ॥ ग्रहकारज की चिंता तहां कछु नांही हैं ॥ और क
दाचित कोई कुसंग दोष ते परस्त्री को संग होइगो ॥ तो त

हांघरकीनांहीविषयमेंनिर्भयनांहीहें।कबहूंकोईस
मयभयो।पाछेंअपनेधर्ममेंप्रभूकेस्मरणमेंरहेगो
गृहादिककेदुखतोबाधानांहीकरेंगे।तातेंऐसोविचा
रिकेंगृहादिककेछोडेतेहीभगवद्धर्मबनेंगो।याप्रका
रकोईवाहीअसंकाकरे।तहांकहेतहें।श्लोक।विषयाक्रां
तदेहानानावेसःसर्वथाहरे।अतोत्रसाधनेभक्तोनेव
त्यागसुखावहौ।९।याकोअर्थ।अबकहेतहें।जोघरमेंवि
षयादिकहें।सोअपनीस्त्रीसोंहें।तहांविषयकोंआवेस
नांहीहें।काहेतेंघरकीस्त्रीमेंविषयभएतेंकोईलौकि
कवैदिकमेंदंडकोदेंनहारोनांहीहें।तातेंमनकोंस्वास्थ्य
रहेतहें।जासमयइंद्रीनकोंउद्वेगभयो।विषयकोंता
समयविषयकरिउद्वेगनिवर्त्तकियो।पाछेंविषयकों
आवेसनांही।ऐसेंकरतकरतविषयमेंअरुचिहोइजा
इ।तातेंगृहस्थकेविषयमें[illegible]आवेसनरहे।
घरहीमेंस्त्रीभारीहे।खानपानकोंअनेकचिंतागृहकार्य
लौकिकवैदिककीचिंताहे।तामेंविषयकोंमननभटके
औरअपनेघरकोंत्यागकरिकेंसंन्यासलेकेंसबछोडि
केंवनकोंगयो।तहांखानपानकोदुखदेखिऔरदेसमें
गयो।तथातीर्थादिकनमेंगयो।तहांदुसंगमिलेसोलौ
किकमेंअनेकप्रकारकोभयपावे।जोमतिकोईजांनेंया
प्रकारसबनतेंछिपावे।कोईसमयकालपायकेंविष
यभयो।तोपाछेंवहसंन्यासधर्मसबगयो।पाछेंवाको
मनवहविषयमेंरात्रिदिंनरहे।औरविषयतोसहज
मेंमिलेनांही।औरकोईविषयकरतदेखिपावे।तोलौकि
कमेंमहाअपकीर्त्तिहोइ।सोदुखमनमेंआवे।विषयनां
हीमिलेतोविषयकेलिएअनेकप्रकारकेजतनकरनेप

संन्या॰
८

यें॥ सोपरस्त्रियाविषयतोदुर्लभहे॥ औरआपुसंन्यासीक
हावतहे॥ सोमनकोंविषयकाहूकोजतायसकेनांही॥ मन
हीमेंविषयकोस्मरणकरे॥ ताकरिविषयकोआवेसवा
केहृदयमेंहोइजाइ॥ तादोषकरिकेंऐसेसंन्यासीकेहृ
दयमेंकवहूंहरिजोसर्वदुखकेहरताभगवांनकव
हूंनांहीआवें॥ काहेतेंयहइंद्रीहेसोदेवताहे॥ इनकोंवि
षयहीवहोतप्रियहें॥ तातेंप्रथमविषयमेंइंद्रीजाइ॥
पाछेंइंद्रीकेवसमनपरयोहे॥ सोजविषयकोंजाइज
हांविषयकीवासनांमेंमनगयो॥ तहांमनकेवस
देहहे॥ देहविनाविषयकेसेंहोइ॥ देहजाइतोइंद्रीम
नकोंविषयसिद्धहोइ॥ ताकेलिएइंद्रीमनमिलकेंदेह
कोंप्रेरे॥ तवदेहतोवसमनकेहे॥ जैसेंजेसेंमनकरेतेसेंते
सेंदेहकरे॥ सोमनकेप्रेरेदेहहूविषयमेंजाइ॥ देहमेंप्रा
णहेंपंचसोऊविषयासक्तिमेंतत्परहोइजांइ॥ सोअष्टप्र
हरवहविषयासक्तमेंहे॥ कोवहूंभूलेनांही॥ याप्रकारवि
षयकोआवेसजासंन्यासीकोंभयो॥ सोभ्रष्टभयो॥ ताकेहृ
दयमेंभगवाननआवें॥ लौकिकवैदिकमेंमनदुखहीपा
वे॥ याप्रकारसंन्यासीकोंआवेसहे॥ सोगृहस्थकोंयाप्रका
रकोआवेसनांहीहें॥ काहेतेंऊपरतेभेषसंन्यासीकोहे॥ तातें
जगतमेंअपनेमनकोंविषयप्रगटकरेनांही॥ औरमनइं
द्रीविषयमेंतत्परहें॥ मनमेंचाहेसोजवहीदुसंगमिले॥ त
वहीसंन्यासीभ्रष्टहोइजाइ॥ ऐसेसंन्यासीकोटानुकोटिसा
धनकरो॥ अनेकभांतिकेभगवद्धर्मलोकनमेंदिखाइवे
केलिएकरो॥ परंतुविषयकोआवेसहृदयमेंहें॥ सोभगवां
नकवहूंहृदयमेंआवेंनही॥ जाकेहृदयमेंविषयकोआवे
सभयो॥ ताकेहृदयमेंभगवानकोंआवेसकेसेंहोइगो॥ औ

सेंहोइगो॥ ऐसेसंन्यासीकोंसाधनवृथाहे॥ केवलश्रमहीजां
ननों॥ कछूफलसिद्धिताकोंनहोइ॥ लोकनमेंदिखाइकेंअप
नींप्रतिष्ठाबढ़ाइकेलिएखानपानकेअर्थअनेकधर्मकोंआ
चरनकरिकेंसबनकोंदिखावतहें॥ भगवानकोधर्मकरि
अपनेकृतार्थअर्थनांहीकरतहें॥ तातेंऐसोजोसंन्यासीप्र
तिष्ठाअर्थबहोतधर्मकरतहे॥ तासोंजोगृहस्थाधर्ममेंहें॥ उ
हांउनसोंथोरोधर्मबनेंतोउहगृहस्थसंन्यासीसोंबडोहे॥
॥ तातेंगृहस्थाश्रमनछोडे॥ औरगृहस्थविषयकोंचिंत
नकाहेकोंकरेगो॥ औरगृहस्थसोंकदाचितअपराधप
रेविषयादिककोहोइतोप्रभूछिमांकरतहें॥ जोयहभेष
मलीनहें॥ मलीनवस्त्रमेंदागलागेतोजांन्योंनजाइ॥ और
यहसंन्यासधर्महेंसोउज्वलकपराहे॥ तातेंउज्वलवस्त्र
मेंकारोदागलागेतोबुरोदीसे॥ तातेंउज्वलधर्मकोंवांनोंलेकें
सर्वसंसारकोंत्यागकरिकेंपाछेंफेरिविषयवासनामेंम
नदेइ॥ सोभगवानकोंअछोनहींदीसे॥ तापरप्रभूबहोत
अप्रसंन्नहोइ॥ जोयहधर्मकीनिंदाकरावतहें॥ तातें
संन्यासधर्मकलियुगमेंबहोतबाधकहे॥ इंद्रीमनसब
अपनेबसहोइ भूखप्यासनिद्रायाकेबसहोइ॥ हृदयमें
दृढवैराग्यहोइ॥ तउबहोतकठिनाईसोंसंन्यासधर्मसि
द्धहोइ॥ सोयहकालमेंसंन्यासधर्मकोंजाननोंबहोतकठि
नहें॥ करनोंदुर्लभहोइ॥ तामेंकहाकहेंनों॥ तातेंगृहस्था
श्रममेंरहिभगवद्धर्मकोंसाधें॥ जितनोंबनिआवेति
तनेहीमेंप्रभूप्रसंन्नहोंइ॥ याप्रकारछहश्लोककोनि
रूपनभयो॥ अबबादीआसंकाकरतहें॥ जोतुमसंन्यास
धर्मकीऐसीहीनताकही॥ सोआगेंबडेबडेमहापुरुषब
डेबडेभगवदीयसंन्यासग्रहनकीले॥ सर्वगृहस्याश्र

मन्नोंत्यागकरि॥ सोउनकोंभगवदप्राप्तिभई॥ सोउसास्त्रवा
रालोकनमेंप्रसिद्धहें॥ औरसर्बकोमूलबेदहे॥ सोबेदउमें
संन्यासधर्मबर्ननकीऐहें॥ औरगृहमेंबिषयादिकलौ
किककोदुखनकहेहें॥ सोप्रसिद्धहें॥ सोआगेंसंन्यासीकों
भगवदप्राप्तिहती॥ अबकछुसंन्यासधर्ममेंहीसांमर्थनां
हीहें॥ प्रथमऔरजुगमेंसंन्यासधर्ममेंसांमर्थ्यहतो सोबे
दकहतहें॥ सोआगेंकह्योसोसांच॥ सोकलियुगमेंकह्योसो
झूंठो॥ सोबेदकहतहें॥ सोआगेंकह्योसोसांच॥ सोकलियुग
मेंकह्योसोझूंठो॥ सोबेदकेबचनझूठेकेसेंकरोगे॥ तथासं
न्यासधर्मकोंआदितेचल्योआयोहे॥ ताकोंझूठोकेसेंक
रोगे॥ बेदभगवदरूपहें॥ [illegible]संन्यासकोंभगवद्रूप
हे॥ तिनकोंअपराधपरेगो॥ याप्रकारकोईआसंकाक
रे॥ तहांकहतहें॥ श्लोक॥ [illegible]भवार्थंतुपरित्यागोप्र
सस्यते॥ स्त्रीयवं[illegible]सिद्धिर्धर्म[illegible]ससत्रूनचान्यथा॥ याको
अर्थ॥ अबश्री[illegible]जीमहाब्रह्मवादीसोंकहतहें जोवे
तोसदांसत्य हे॥ [illegible]बेदकह्योहेसोसबसांचहे॥ औरसंन्या
सधर्म हेंसोउसदांसत्य हे॥ औरसंन्यासधर्म हें॥ तामेंय
हसांमर्थ्यहे जोजाप्रकारबेदसंन्यासधर्मकोंकह्यो हे॥ ताही
रीतिसोंजोकोई संन्यासधर्मकोंआचरनकरे॥ तोअजहूं
बहुजीबकृतार्थहोइ॥ सोकहतहें॥ जोयाप्रकारसाधनक
रतकरतजबअनुभवहोइ॥ तबसंन्यासग्रहेनकरे॥
ग्रहादिककोंछोडे॥ प्रथमग्रहस्थाश्रममेंरहिकेंनवधा
भक्तिअत्यंतस्नेहपूरबकमनलगाइकेंकरे॥ तथाअष्टां
गयोगसाधनाइंद्रियादिककोंनिग्रहकरें॥ सगरीइंद्री
नकोंजांनेंजोअबऐमेरेबसभई॥ याप्रकारसंन्यासध
र्मकेसाधनकरतकरतजबभगवांनकोंकछुअनुभ